

ناساعد حالات میں جس طرح ادارہ "نوجیون" نے جنم اشٹمی نمبر ...
خریدار بھائیوں، دردمندوں اور دوسرے دوستوں
کی طرف سے حوصلہ افزائی کی بڑی ضرورت ہے۔
"نوجیون" کوئی سرکاری یا نیم سرکاری
اخبار نہیں اس کی شروع سے ہی یہ کوشش
رہی ہے۔ کہ حکومت کو اپنا دوست بنا لے
لیکن حکومت کو اس کی دوستی کی کوئی ضرورت
نہیں۔ "نوجیون" ہندوستان اور
کشمیر کے الحاق کا حامی ہندو مسلم سکھ
اتحاد کا علمبردار اور دیش اور قوم کا خادم
اخبار رہا ہے۔ ان صفات کے باوجود جانے
حکومت کا منزلہ کیوں اس پر گرتا ہے۔
شاید اس کی وجہ یہ ہے۔ کہ یہ اخبار
حکومت کو خطاکاری اور اس کی غلطیاں
پر ٹوکتا ہے۔ اور صراط المستقیم (سیدھا
راستہ) پر چلنے کی استدعا کرتا ہے۔ ان
ہی دنوں ہم نے ایک مقامی ہفتہ وار اخبار
کا ۱۵ اگست نمبر پڑھا۔ ہم نے اس اخبار
میں کم سے کم پانچ سو روپیوں کے اشتہارات
پائے۔ ہم ناخوش نہیں ہوئے کہ اس ساحر
پر اس قدر مہربانی کیوں کی گئی؟ اور جب
ہم نے اسی پندرہ اگست پر "نوجیون"
معمول کے مطابق نکالا اور جناب چیف
منسٹر صاحب کا مضمون بھی بصد آداب و نیاز
چھپوایا تو ہمیں پانچ روپیوں کا اشتہار
بھی کیوں نہ مل سکا؟ اس لئے ہمارا اندازہ
غلط نہیں کہ ریاستی حکومت جان بوجھ کر
"نوجیون" کو فراموش کر رہی ہے۔

۲۵ اگست ک...

سری نگر۔ سیکرٹری کشمیر ...
اگست ۷۰ء کو حسب معمول ...
منایا جائے گا۔
اس دن صبح کے ...
اگنی کی کتھا ہوگی اور ...
شہیدوں کی ...
کے لئے جوق در جوق ...

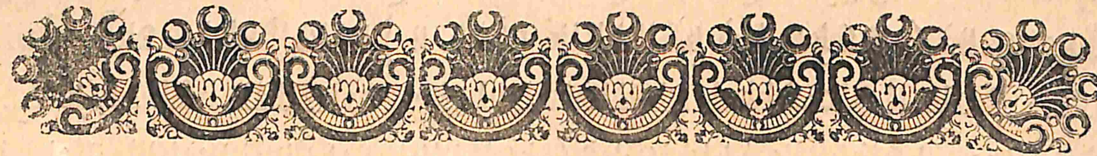
میک اپ



جنم اشٹمی مبارک ہو

तहां (मत्कर्मकृत् मत्परमः) इनदोनोंपदोंकरिकैतौं संपूर्णकर्मयोग तथासंपूर्णध्यानयोगकथनकऱ्या ॥ जोकर्मयोग तथाध्यानयोग त्वंपदार्थका शोधकहै ॥ और (मद्भक्तः) इसपदकरिकैतौं समग्रउपासनाकांडकेअर्थकासंग्रहकऱ्या ॥ और (संगवर्जितः) इसपदकरिकैतौं सर्वसंगकापरित्यागकरिकै एकांतदेशविषेस्थितहोइकै यहअधिकारीपुरुष भगवत्ध्याननिष्ठहोवै यह अर्थकथनकऱ्या ॥ और (निर्वैरःसर्वभूतेषु) इसवचनकरिकैतौं यहअर्थ कथनकऱ्या ॥ यहअधिकारीपुरुष इससर्व विश्वकूं भगवत्रूपकरिकैदेखै ॥ जोकदाचित् यहअधिकारीपुरुष इससर्वविश्वकूं भगवत्रूपकरिकैनहींदेखैंगा ॥ तौंभेदबुद्धिवाले इसअधिकारीपुरुषविषे सानि वैरताहीं संभवैंगीनहीं ॥ इसप्रकारतैं यहलोक सर्वगीताशास्त्रकेसारभूत अर्थकूंकथनकरेहै ॥ और (हेपांडव) इससंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुनका विशुद्धवंशविषेजन्म कथनकऱ्या ॥ ताकरिकै यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ तूं अर्जुन इससर्वशास्त्रकेसारभूतअर्थकूं जानणेविषेसमर्थहैं इति ॥५५॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येणस्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायांगीतागूढार्थदीपिकाख्यायामेकादशोऽध्यायःसमाप्तः॥ ११ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥

इति एकादशोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ११ ॥



ॐश्रीगणेशायनमः ॥ ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ द्वादशाऽध्यायप्रारंभः ॥ तहांपूर्व एकादशेअध्यायकेअंतविषे (मत्कर्मकृन्मत्परमोमद्भक्तःसंगवर्जितः ॥ निर्वैरःसर्वभूतेषुयःसमामेतिपांडव) इसश्लोकविषे श्रीभगवान्नैं च्यारिवार मत् यहशब्द कथनकऱ्याहै ॥ तिस मत्शब्दकेअर्थविषे यहसंशयहोवैहै ॥ जो श्रीभगवान्नैं तामत्शब्दकरिकै निराकारवस्तुका कथनकऱ्याहै ॥ अथवा साकारवस्तुका कथनकऱ्याहै इति ॥ तहां इसप्रकारकेसंशयकीउत्पत्तिविषे श्रीभगवान्के पूर्वउक्तवचनहींकारणहैं ॥ काहेतैं श्रीभगवान्नैं (मत्कर्मकृत्) इसश्लोकतैंपूर्व निराकारवस्तुकूं तथासाकारवस्तुकूं दोनोंकूं मत् इसशब्दकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ तहां (बहूनांजन्मनामंतेज्ञानवान्मांप्रपद्यते ॥ वासुदेवःसर्वमितिसमहात्मासुदुर्लभः) इत्यादिकवचनोंकरिकैतौं श्रीभगवान्नैं तामत्शब्दकरिकै निराकारवस्तुकाहीं कथनकऱ्याहै ॥ और विश्वरूपकेदर्शनतैंअनंतर (नाहंवेदैर्नतपसानदानेननचेज्यया ॥ शक्यएवंविधोद्रष्टुंदृष्टवानसिमांयथा) इत्यादिकवचनोंकरिकैतौं श्रीभगवान्नैं तामत्शब्दकरिकै साकारवस्तुकाहीं कथनकऱ्याहै ॥ तहां श्रीभगवान्के तिनदोनोंप्रकारकेउपदेशोंकीव्यवस्था अधिकारीपुरुषकेभेदकरिकैहीं करणीहोवैंगी ॥ जोकदाचित् अधिकारीपुरुषकेभेदकरिकै तिनदोनोंप्रकारकेउपदेशोंकीव्यवस्थानहींकरीये ॥ तौं तिनदोनोंप्रकारकेउपदेशोंका परस्पर विरोधप्राप्तहोवैंगा ॥ इसप्रकारअधिकारिपुरुषकेभेदकरिकै तिनदोनोंप्रकारकेउपदेशोंकीव्यवस्थाकेप्राप्तहुए मैंमुमुक्षुअर्जुननैं क्यानिराकारवस्तु चिंतनकरणेयोग्यहै ॥ अथवा साकारवस्तु चिंतनकरणेयोग्यहै ॥ इसप्रकार आपणेअधिकारकेनिश्चयकरणेवासते सगुणविद्या तथानिर्गुणविद्या इनदोनोंविद्यावोंके विशेषता जानणेकीइच्छाकरताहुआ अर्जुन श्रीभगवान्केप्रति प्रश्नकरेहै ॥

(मू० श्लो०) अर्जुनउवाच ॥ एवंसततयुक्तायेभक्तास्त्वांपर्युपासते ॥ येचाप्यक्षरमव्यक्तंतेषांकेयोगवित्तमाः ॥ १ ॥ एवम् । सततयुक्ताः । ये । भक्ताः । त्वाम् । पर्युपासते । ये । च । अपि । अक्षरम् । अव्यक्तम् । तेषाम् । के । योगवित्तमाः ॥ १ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभगवन् इसप्रकार निरंतरयुक्तहुए तथाएकसाकारवस्तुकेशरणहुए जेअधिकारीपुरुष तैंसाकारपरमेश्वरकूं निरंतरचिंतनकरेहैं तथा जेविरक्तपुरुष अक्षर अव्यक्तरूप तैंनिर्गुणब्रह्मकूंहीं निरंतरचिंतनकरेहैं तिनदोनोंकेमध्यविषे कौनपुरुष अतिशयकरिकैयोगकेजानणेहारेहैं ॥ १ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् जेअधिकारीजन (मत्कर्मकृन्मत्परमः) इसपूर्वश्लोकउक्तप्रकारकरिकै सततयुक्तहैं ॥ अर्थात् जेपुरुष निरंतर भगवत्अर्पणकर्मादिकोंविषे सावधानताकरिकै प्रवृत्तहुएहैं ॥ तथा जेअधिकारीपुरुष भक्तहैं अर्थात् जेपुरुष एकसाकारवस्तुकेहीं शरणकूंप्राप्तहुएहैं ॥ इसप्रकारसततयुक्तहुए तथाभक्तहुए

जेअधिकारीपुरुष इसप्रकारकेसाकाररूपवाले तैंपरमेश्वरकूं श्रद्धाभक्तिपूर्वक निरंतरचिंतनकरेहैं ॥ इतनैंकहणेकरिकै सगुणब्रह्मकेचिंतनकरणेहारेभक्तजनोंका कथन कऱ्या ॥ अब निर्गुणब्रह्मकेचिंतनकरणेहारेभक्तजनोंका कथनकरेहैं (येचाप्यक्षरमिति) हेभगवन् जेअधिकारीपुरुष सर्वसंसारतैंविरक्तहुए तथासर्वकर्मोंकेत्याग वालेहुए अक्षररूप तथाअव्यक्तरूप तैंपरमेश्वरकूं निरंतर चिंतनकरेहैं ॥ तहां नक्षरति अश्नुतेवा इत्यक्षरम् ॥ अर्थयह ॥ जोवस्तु कदाचित्भी नाशकूंनहींप्राप्तहोवै ताकानाम अक्षरहै अथवा जोवस्तु आपणेसत्तास्फुरणरूपकरिकै इससर्वजगत्कूं व्याप्तकरेहै ताकानाम अक्षरहै ॥ ऐसाअक्षररूप निर्गुणब्रह्महै ॥ इसीनिर्गुणब्रह्म रूपअक्षरकूं बृहदारण्यकउपनिषदविषे याज्ञवल्क्यमुनिनैं गार्गीकेप्रति स्थूलसूक्ष्मादिकसर्वउपाधियोंतैंरहित कथनकऱ्याहै ॥ तहांश्रुति ॥ (एतद्वैतदक्षरंगार्गिब्राह्मणा अभिवदंत्यस्थूलमनण्वह्रस्वमदीर्घम्) ॥ अर्थयह ॥ हेगार्गी इसीनिर्गुणब्रह्मरूपअक्षरकूं ब्रह्मवेत्ताब्राह्मण स्थूलभावतैंरहितकहेहैं तथाअणुभावतैंरहित कहेहैं तथा ह्रस्वभावतैंरहित कहेहैं तथादीर्घभावतैंरहित कहेहैं इति ॥ जिसकारणतैं सोनिर्गुणब्रह्मरूपअक्षर सर्वउपाधियोंतैंरहितहै ॥ इसकारणतैंहीं सोनिर्गुणब्रह्मरूपअक्षर अव्यक्तहै ॥ अर्थात् नेत्रादिकसर्वकरणोंकाअविषयहै ॥ ऐसेअक्षररूप तथाअव्यक्तरूप तैंनिराकारनिर्गुणपरमेश्वरकूं जेअधिकारीपुरुष श्रद्धाभक्तिपूर्वक निरंतर चिंतनकरेहैं ॥ तिनदोनोंप्रकारकेअधिकारीजनोंकेमध्यविषे कौंनअधिकारीजन योगवित्तमहैं ॥ अर्थात् कौंनअधिकारीजन अतिशयकरिकैयोगकेजानणेहारेहैं ॥ अथवा कौंनअधिकारीजन अतिशयकरिकै समाधिरूपयोगकूं प्राप्तहुएहैं ॥ तहां समाधिरूपयोगकूं जेपुरुष जानेहैं अथवा प्राप्तहोवैहैं तिनोंकानाम योगवित्हैं ॥ तिनयोगवित्पुरुषोंकेमध्यविषे जेअत्यंतश्रेष्ठहोवैं तिनोंकानाम योगवित्तमहै ॥ अर्थात् इसप्रकारकेयोगवित्तौंतेदोनोंप्रकारकेअधिकारीजनहैं ॥ तिनदोनों प्रकारके अधिकारीजनोंकेमध्यविषे कौंनअधिकारीजन अत्यंतश्रेष्ठयोगवित्हैं ॥ अर्थात् किनअधिकारीपुरुषोंकाज्ञान मैंअर्जुननैं अनुसरणकरणेयोग्यहै ॥ तात्पर्ययह ॥ सगुणब्रह्मके जानणेहारेपुरुषोंकाज्ञान हमारेकूं अनुसरणकरणेयोग्यहै ॥ अथवा निर्गुणब्रह्मकेजानणेहारेपुरुषोंकाज्ञान हमारेकूं अनुसरणकरणे योग्यहै इति ॥ १ ॥ ❀ ॥ तहां सर्वज्ञ श्रीकृष्णभगवान् तिसअर्जुनका सगुणविद्याविषेहीं अधिकारकूंदेखताहुआ तिसअर्जुनकेप्रति सासगुणविद्याहीं विधानकरैंगा ॥ तथा यथाअधिकारकेअनुसार ताविद्याकेन्यूनअधिकतायुक्तसाधनोंकाभी विधानकरैंगा ॥ इसकारणतैं प्रथम साकारब्रह्मविद्याविषे ताअर्जुनकी रुचिकरावणेवासतै तासाकारब्रह्मविद्याकीस्तुतिकरताहुआ साप्रथम साकारब्रह्मविद्याहींश्रेष्ठहै इसप्रकारकेउत्तरकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) श्रीभगवानुवाच ॥ मय्यावेश्यमनोयेमांनित्ययुक्ताउपासते ॥ श्रद्धयापरयोपेतास्तेमेयुक्ततमामताः ॥ २ ॥ मयि[1] । आवेश्य[2] । मनः[3] । ये[4] । मां[5] । नित्ययुक्ताः[6] । उपासते[7] । श्रद्धया[8] । परया[9] । उपेताः[10] । ते[11] । मे[12] । युक्ततमाः[13] । मताः[14] ॥ २ ॥

(इतिपदच्छेदः)॥ हेअर्जुन जेअधिकारीपुरुष आपणेमनकूं मैंसगुणब्रह्मविषे एकाग्रकरिकै नित्ययुक्तहुए तथासात्विक श्रद्धाक
रिकै युक्तहुए मैंसाकारब्रह्मकूं चिंतनकरेहैं तेअधिकारीजन मैंपरमेश्वरकूं युक्ततम अभिमतहैं ॥ २॥ (इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मैंभगवान् वासुदेवपरमेश्वरसगुणब्रह्मविषे आपणेमनकूं आवेशकरिकै अर्थात् अनन्यशरणताकरिकै तथानिरतिशयप्रियताकरिकै आपणेमनकूं मैंसगुणब्रह्मविषे प्रवेशकरिकै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे हिंगुलकेरंगकेसाथिमिलिकै लाख तन्मयहोइजावैहै तैसे आपणेमनकूं मैंपरमेश्वरमयकरिकै ॥ जेअधिकारी पुरुष नित्ययुक्तहुए ॥ अर्थात् निरंतर मैंपरमेश्वरकेचिंतनविषयक उद्यमवालेहुए ॥ तथा जेअधिकारीपुरुष परश्रद्धाकरिकैयुक्तहुए ॥ अर्थात् आराधनकन्याहुआ यहसगुणपरमेश्वर अवश्यकरिकै हमारा निस्तारकरैगा याप्रकारकी आस्तिक्यबुद्धिरूप सात्विकश्रद्धाकरिकैयुक्तहुए सर्वयोगेश्वरोंकाभीईश्वररूप तथासर्वज्ञ तथासमग्रकल्याणगुणोंकास्थानरूप ऐसेसाकारब्रह्मरूप मैंपरमेश्वरकूं सर्वदा चिंतनकरेहैं ॥ तेअधिकारीजनहीं मैंपरमेश्वरकूं युक्ततमरूपकरिकै अभिमतहैं ॥ अर्थात् तेअधिकारीपुरुष सर्वकालविषे मैंपरमेश्वरविषे आसक्तचित्तवालेहोणेतैं सर्वविषयोंतैंविमुखहोइकै मैंपरमेश्वरकाचिंतनकरतेहुए संपूर्णदिनरात्रियोंकूंवितीतकरेहैं ॥ यातैं तेसगुणब्रह्मकेचिंतनकरणेहारेअधिकारी जनहीं मैंपरमेश्वरकूं युक्ततमरूपकरिकै अभिप्रेतहैं ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वर तिनअधिकारीजनोंकूं सर्वयोगीजनोंतैंश्रेष्ठ मानताहूं इति ॥ २॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् निर्गुणब्रह्मकेजानणेहारेपुरुषोंकीअपेक्षाकरिकै तिनसगुणब्रह्मकेजानणेहारेपुरुषोंविषे कौंनअतिशयताहै ॥ जिसअतिशयताकरिकै तेसगुणब्रह्मकेजानणेहारेपुरुषहीं आपकूं युक्ततमरूपकरिकैअभिमतहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए ॥ श्रीभगवान् तिसअतिशयताकूं कथनकरताहुआ प्रथम तिसअतिशयताकेनिरूपक निर्गुणब्रह्मकेवेत्तावोंकीदोश्लोकोंकरिकै स्तुतिकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) येत्वक्षरमनिर्देश्यमव्यक्तंपर्युपासते ॥ सर्वत्रगमचिंत्यंचकूटस्थमचलंध्रुवम् ॥ ३॥ संनियम्येंद्रियग्रामंसर्वत्रसमबुद्धयः ॥ तेप्राप्नुवंतिमामेवसर्वभूतहितेरताः ॥४॥ ये । तु । अक्षरम् । अनिर्देश्यम् । अव्यक्तं । पर्युपासते । सर्वत्रगम् । अचिंत्यं । च । कूटस्थम् । अचलं । ध्रुवं । संनियम्य । इंद्रियग्रामं । सर्वत्र । समबुद्धयः । ते । प्राप्नुवंति । माम् । एवं । सर्वभूतहितेरताः ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ (इतिपदच्छेदः)॥ हेअर्जुन पुनः जेअधिकारीजन इंद्रियोंके समूहकूं निरुद्धकरिकै सर्वत्र समबुद्धिवालेहुए तथासर्वभूतों केहितविषेप्रीतिवालेहुए अनिर्देश्य अव्यक्त सर्वव्यापक अचिंत्य तथा कूटस्थ अचल ध्रुव ऐसेनिर्गुणब्रह्मरूप अक्षरकूं निरंतर चिंतनकरेहैं तेअधिकारीपुरुषभी मैंनिर्गुणब्रह्मकूं हीं प्राप्तहोवैहैं ॥ ३ ॥ ४॥ (इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जेअधिकारीजन अक्षररूप मैंनिर्गुणब्रह्मकूं निरंतर चिंतनकरेहैं ॥ तेअधिकारीपुरुषभीमैंअक्षररूपनिर्गुणब्रह्मकूंहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ जोअक्षर रूपनिर्गुण ब्रह्म बृहदारण्यकउपनिषदविषे याज्ञवल्क्यमुनिनै गार्गीके प्रति (एतद्वैतदक्षरगार्गिब्राह्मणाअभिवदंत्यस्थूलमनणव्ह्रस्वमदीर्घम्) इत्यादिकवचनोकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ ईहां (येतु) इसवचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै ॥ सोतुशब्द पूर्वकथनकरेहुए सगुणब्रह्मकेउपासकोंतैं इननिर्गुणब्रह्मके उपासकोंविषे विलक्षणताके बोधनकरणेवासतैहै ॥ अब तिसअक्षरविषे निर्गुणब्रह्मरूपताकेसिद्धकरणेवासतै ताअक्षरके सप्तविशेषणोंकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥ हेअर्जुन सोनिर्विशेषब्रह्मरूप अक्षर कैसाहै अनिर्देश्यहै ॥ अर्थात्सोअक्षरब्रह्म किसीशब्दकरिकैकथनकरणेकूंअशक्यहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोअक्षरब्रह्म शब्दकरिकै क्युंनहींकथ नकऱ्याजावैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए ॥ श्रीभगवान् ताअनिर्देश्यपणेविषे हेतुकहेहैं (अव्यक्तमिति) हेअर्जुन जिसकारणतैं सोअक्षर अव्यक्तहै ॥ अर्थात् शब्दकीप्रवृत्तिकेनिमित्तभूतजे जाति गुण क्रियासंबंध यहच्यारि धर्महैं तिनच्यारोंतैं सोअक्षररहित ॥ तिसकारणतैंसोअक्षरब्रह्मकिसीभीशब्दकरिकैकथ नकऱ्याजातानहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ लोकविषे जिसजिसअर्थविषे जोजोशब्द प्रवृत्तहोवैहै ॥ सोसोशब्द तिसतिसअर्थविषे जातिकूं अथवा गुणकूं अथवा क्रियाकूं अथवासंबंधकूं द्वारभूतकरिकैहीं प्रवृत्तहोवैहै ॥ जैसे ब्राह्मण इत्यादिकशब्द ब्राह्मणत्वादिकजातिकूंलैकेहीं स्वस्वअर्थविषे प्रवृत्तहोवैहैं ॥ और शुक्ल नील इत्यादि कशब्द शुक्लनीलादिकगुणोंकूंलैकेहीं स्वस्वअर्थविषे प्रवृत्तहोवैहैं ॥ और पाचक पाठक इत्यादिकशब्दतौं पाकादिरूपक्रियाकूंलैकेहीं स्वस्वअर्थविषे प्रवृत्तहो वैहैं ॥ और पिता पुत्र इत्यादिकशब्दतौं जन्यजनकभावआदिकसंबंधकूंलैकेहीं स्वस्वअर्थविषे प्रवृत्तहोवैहैं ॥ इस प्रकारतैं सर्वशब्द जातिगुणादिकनिमित्तकूंलैके हीं आपणेआपणेअर्थविषे प्रवृत्तहोवैहैं ॥ और निर्विशेषअक्षरब्रह्मविषे तेजातिगुणादिकविशेषधर्महैंनहीं ॥ यातैं ताअक्षरब्रह्मविषे किसीभीशब्दकीप्रवृत्ति होवैनहीं इति ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोअक्षरब्रह्म तिनजातिगुणादिकधर्मोंतैंरहित किसहेतुतैं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् तिनजातिआदिकोंतैंरहि तपणेविषे हेतुकहेहै (सर्वत्रगमिति) हेअर्जुन जिसकारणतैं सोअक्षरब्रह्म सर्वत्रगहै ॥ अर्थात् सर्वत्रव्यापकहै तथासर्वकाकारणहै ॥ तिसकारणतैं सोअक्षरब्रह्म तिनजातिगुणादिकोंतैंरहितहै ॥ जोपदार्थ परिच्छिन्नहोवैहै तथाकार्यहोवैहै ॥ सोपदार्थहीं तिनजातिगुणादिकधर्मवालाहोवैहैं ॥ यद्यपिनैयायिक आकाश काल दिशा इनतीनोंविषे अकार्यपणा तथाव्यापकपणा अंगीकारकरिकैभी तिनतीनोंविषे जातिगुणादिक अंगीकारकरेहैं ॥ यातैं परिच्छिन्नकार्यविषेहीं तेजातिगुणा दिकरहेहैं यहनियम संभवतानहीं ॥ तथापि वेदांतसिद्धांतविषे तिनआकाशादिकोंविषेभी कार्यपणा तथापरिच्छन्नपणाहीं अंगीकारहे ॥ तहां (आत्मनआका शःसंभूतः ॥) अर्थयह ॥ आत्मातैं आकाश उत्पन्नहोताभया ॥ इत्यादिकश्रुतियोंनैं तिनआकाशादिकोंकी आत्मातैंउत्पत्ति कथनकरीहै ॥ (और योवैभूमा

तत्सुखंनाल्पेसुखमस्ति ॥) इत्यादिकश्रुतियोंनैं व्यापकआत्मातैंभिन्न आकाशादिकसर्वप्रपंचकूं परिच्छिन्नकह्याहै ॥ यातैं आकाशादिकोंविषे तानियमकाभंगहोवै नहीं इति ॥ और जिसकारणतैं सोअक्षरब्रह्म सर्वत्रव्यापकहै ॥ तिसकारणतैंसोअक्षरब्रह्म अचिंत्यहै ॥ अर्थात् सोअक्षरब्रह्म जैसे शब्दकेप्रवृत्तिकाविषयनहींहै तैसे मनकेप्रवृत्तिकाभीविषयनहींहै ॥ शब्दकेप्रवृत्तिकीन्यांई मनकीप्रवृत्तिभी परिच्छिन्नवस्तुकूंहीं विषयकरैहै ॥ ताअक्षरब्रह्मविषे परिच्छिन्नपणाहैनहीं ॥ यातैं ताक्षरब्रह्मविषे मनकेप्रवृत्तिकीभीविषयता संभवैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (यतोवाचोनिवर्त्ततेअप्राप्यमनसासहइति)॥ अर्थयह ॥ मनसहितवाणी जिसअक्षरब्रह्मकूंन प्राप्तहोइकै जिसअक्षरब्रह्मतैं निवर्त्तहोइजावैहैं इति ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोअक्षरब्रह्म जोकदाचित् वाणीका तथामनका नहींविषयहोवै ॥ तौं श्रुतिवचन तथा व्याससूत्र ताब्रह्मविषे वाणीकीविषयता तथामनकीविषयता किसवासतै कथनकरतेहै ॥ तहांश्रुति ॥ (तंत्वौपनिषदंपुरुषंपृच्छामिइति दृश्यतेत्वग्र्ययाबुद्ध्यासूक्ष्मयासूक्ष्मदर्शिभिःइति मनसैवानुद्रष्टव्यमिति) ॥ अर्थयह ॥ हेशाकल्यकेवल उपनिषदप्रमाणकरिकैजानणेयोग्यजोपरब्रह्महै ॥ तिसपरब्रह्मकास्वरूप मैंयाज्ञवल्क्य तुमारेसैं पुछताहूं इति॥ और सूक्ष्मदर्शीविद्वान्पुरुषोंनैं विषयवासनातैंरहित एकाग्रसूक्ष्मबुद्धिकरिकैहीं यहआत्मादेव साक्षात्कारकरीताहै इति ॥ और यह आत्मा देव केवलशुद्धमनकरिकैहीं देख्याजावैहै इति॥ तहां व्याससूत्रम्॥(शास्त्रयोनित्वात्)॥ अर्थयह॥ उपनिषदरूपशास्त्रहै योनि क्या प्रमाणजिसविषे ऐसापरब्रह्महै इति ॥ इत्यादिकश्रुतिसूत्रवचन तिसपरब्रह्मविषेभी उपनिषदरूपवाणीकीविषयता तथाशुद्धमनकीविषयता कथनकरेहैं ॥ ब्रह्मकूंअविषयमानणेविषे तेसर्व असंगतहोवैंगे ॥ समाधान ॥ हेअर्जुन महावाक्यरूपशब्दप्रमाणतैं उत्पन्नभईजाबुद्धिकीअंत्यवृत्तिहै ॥ ताबुद्धिकीवृत्तिविषे अविद्याकल्पितसंबंधकरिकै परमानंदबोधरूपशुद्धवस्तुकेप्रतिबिंबितहुएहीं कल्पितरूप अविद्याकी तथाताअविद्याकेकार्यकी निवृत्तिहोवैहै ॥ याकारणतैंहीं उपचारमात्रतैं तिसपरब्रह्मविषे वाणीकीविषयता तथाबुद्धिकीविषयता कथनकरिहैअर्थात् महावाक्यजन्य शुद्धबुद्धिकीवृत्ति चिदाभासकरिकैयुक्तहुई ब्रह्माश्रिततथाब्रह्मविषयक अविद्याकी निवृत्तिमात्रकरेहै ॥ जिसकूंशास्त्रविषे वृत्तिव्याप्तिकहेहैं तिसकूंअंगीकारकरिकैहीं श्रुतिसूत्रवचनोंनैं ताब्रह्मविषे वाणीकीविषयता तथामनकीविषयता कथनकरीहै ॥ जैसे देहादिकअनात्मपदार्थोंविषे फलव्याप्तिरूप मुख्यविषयताहै ॥ तैसे ब्रह्मविषे कोईमुख्यविषयता कथनकरीनहीं इससर्वअभिप्रायकरिकै श्रीभगवान् तिसअक्षरविषे कल्पित अविद्याकेसंबंधका उपपादनकरणेवासतैकहेहै (कूटस्थम्) इति॥ तहां जोवस्तु वास्तवतैंमिथ्याभूतहुआभी सत्यरूपकरिकैप्रतीतहोवैहै तावस्तकूं लोकविषे कूट इसनामकरिकैकथनकरेहैं ॥ जैसे इसलोकविषे जोसाक्षीपुरुष वास्तवतैंमिथ्यावादीहुआभी सत्यवादीपुरुषकीन्यांई प्रतीतहोवैहै तासाक्षीकूं कूटसाक्षी कहेहैं॥ तैसे मायाअविद्यारूपयहअज्ञानभी आपणेकार्यप्रपंचसहित वास्तवतैंमिथ्याभूतहुआभी विचारहीनपुरुषोंकूं सत्यरूपकरिकैप्रतीतहोवैहै ॥ यातैं यहकार्यप्रपंचसहित

अज्ञानभी कूटइसनामकरिकैकह्याजावैहै ॥ ताकार्यप्रपंचसहित अज्ञाननामकूटविषे जोवस्तु अध्यासिकसंबंधकरिकै अधिष्ठानरूपतैं स्थितहोवैहै तावस्तुकानाम कूटस्थहै ॥ अर्थात् कार्यप्रपंचसहितअज्ञानका अधिष्ठानरूपजोपरब्रह्महै ताकानाम कूटस्थहै ॥ इतनैंकहणेकरिकै पूर्वउक्तसर्वअनुपपत्तियोंका परिहारकऱ्या ॥ इसकारणतैंहीं सर्वविकारोंकूं अविद्याकरिकैकल्पितहोणेतैं ताअविद्याकाअधिष्ठानरूपसाक्षीचैतन्य निर्विकारहै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै (अचल मिति) तहां विकारकानाम चलनहै ॥ ताचलनरूपविकारतैंजोरहितहोवै ताकानाम अचलहै ॥ अचलहोणेतैंहीं सोअक्षरब्रह्म ध्रुवहै ॥ अर्थात् परिणामीभावतैं रहितनित्यहै ॥ इसप्रकारके अक्षरशुद्धब्रह्मरूप मैंपरमेश्वरकूं जेअधिकारीजन चिंतनकरेहैं ॥ अर्थात् ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं वेदांतशास्त्रकेश्रवणकरिकै प्रमाणगत असंभावनाकीनिवृत्तिकरिकै तथामननकरिकै प्रमेयगतअसंभावनाकीनिवृत्तिकरिकै तिसतैंअनंतर विपरीतभावनाकीनिवृत्तिकरणेवासतै जेअधिकारीपुरुष ध्यानकूं करेहैं ॥ अर्थात् अनात्माकारविजातीयवृत्तियोंका तिरस्कारकरिकै तैलधाराकीन्यांई विच्छेदतैंरहित सजातीयवृत्तियोंकाप्रवाहरूपनिदिध्यासनभूतध्यानकरिकै जेअधिकारीपुरुष मैंनिर्गुणब्रह्मकूंविषयकरेहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् श्रोत्रादिकइंद्रियोंका आपणेआपणेशब्दादिकविषयोंकेसाथि संबंधकेवियमानहुए सोवि जातीयवृत्तियोंकातिरस्कार कैसेहोवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्कहेहै (सन्नियम्येंद्रियग्राममिति) हेअर्जुन जेअधिकारीजन आपणेश्रोत्रादिक इंद्रियोंकेसमूहकूं आपणेआपणेशब्दादिकविषयोंतैंनिवृत्तकरिकै मैंनिर्गुणब्रह्मकाध्यानकरेहैं ॥ इतनैं कहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं शमदमादिकषट्संपत्ति कथनकरी ॥ ॥ शंका ॥ हेभगवन् विषयभोगकीवासनाकेवियमानहुए तिनशब्दादिकविषयोंतैं श्रोत्रादिकइंद्रियोंकीनिवृत्ति कैसेसंभवैगी ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (सर्वत्रसमबुद्धयः इति) हेअर्जुन सर्वविषयोंविषे समहै क्या तुल्यहै अर्थात् हर्षविषाददोनोंतैं तथारागद्वेषदोनोंतैंरहितहैबुद्धिजिनोंकी तिनोंकानाम सर्वत्रस मबुद्धिहै ॥ तात्पर्ययह ॥ सम्यक्ज्ञानकरिकै जिनपुरुषोंका हर्षविषाद आदिकोंकाकारणरूपअज्ञान निवृत्तहोइगयाहै ॥ तथा विषयोंविषेदोषदर्शनकेअभ्यासकरि कै जिनपुरुषोंकीसर्व विषयइच्छा निवृत्तहोइगईहै ॥ ऐसेतत्त्ववेत्तापुरुषोंकानाम सर्वत्रसमबुद्धिहै ॥ ऐसेसर्वत्रसमबुद्धिवालेहुए जेअधिकारीपुरुष मैंनिर्गुणब्रह्मकाचिंतन करेहैं ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं वशीकारनामावैराग्य कथनकऱ्या॥ इसीकारणतैंहीं सर्वत्रआत्मदृष्टिकरिकै हिंसाकेकारणरूपद्वेषतैंरहितहोणेतैं जेअधिका रीपुरुष सर्वभूतोंकेहितविषेप्रीतिवालेहैं ॥ अर्थात् (अभयंसर्वभूतेभ्योमत्तःस्वाहा) इसमंत्रकरिकै सर्वभूतप्राणीयोंकेतांई दईहुईहैअभयरूपदक्षिणा जिनोंनैं ऐसेजेपरमहंससंन्यासीहैं ॥ तहां संन्यासीयोंनें सर्वभूतप्राणियोंकेतांई अभयदानदेणा यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (अभयंसर्वभूतेभ्यो दत्वासंन्यासमाचरेत्) ॥ अर्थयह ॥ यहअधिकारीपुरुष शरीरकरिकै तथामनकरिकै तथावाणीकरिकै सर्वस्थावरजंगमरूपप्राणीयोंकेतांई अभयदान

देकरिकै संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरै इति ॥ इसप्रकारकेसर्वसाधनोंकरिकैसंपन्नहुए तेसर्वतैंविरक्तअधिकारीजन आप ब्रह्मरूपहुएभी सर्वसाधनोंकाफलभूत तथासंशयतैंरहित ऐसेआत्मसाक्षात्कारकरिकै मैंअक्षरब्रह्मरूपकूंहीप्राप्तहोवैहैं ॥ अर्थात् तेतत्ववेत्तापुरुष तिसतत्त्वसाक्षात्कारतैंपूर्वभी मैंनिर्गुणब्रह्मरूपहुएही तिसत त्वसाक्षात्कारकरिकै अविद्याकेनिवृत्तहुए मैंनिर्गुणब्रह्मरूपहुएही स्थितहोवैहैं ॥ तहांश्रुति ॥ (ब्रह्मैवसन्ब्रह्माप्येति ब्रह्मविद्ब्रह्मैवभवति ॥)अर्थयह ॥ यहअधिका रीजन ब्रह्मरूपहुआहीं ब्रह्मरूपकूंप्राप्तहोवैहै॥और मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारतै आपणाआत्मारूपकरिकैब्रह्मकूंजानणेहारापुरुष ब्रह्मरूपही होवैहै इति॥ तहां ज्ञानवान्पुरुष ब्रह्मरूपहींहै यहवार्त्ता (ज्ञानीत्वात्मैवमेमतम्) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं आपहीं इसगीताशास्त्रविषे कथनकरीहै इति ॥ ३॥ ४ ॥ ❀ ॥ अब इननिर्गुणब्रह्म केचिंतनकरणेहारेअधिकारीजनोंतैं पूर्वकथनकऱ्येहुएसगुणब्रह्मकेचिंतनकरणेहारेअधिकारीजनोंकीअतिशयताकूंदिखावताहुआ श्रीभगवान् अर्जुनकेंप्रति कहेहै ॥

(मू० श्लो०) क्लेशोधिकतरस्तेषामव्यक्तासक्तचेतसाम् ॥ अव्यक्ताहिगतिर्दुःखंदेहवद्भिरवाप्यते ॥ ५ ॥ क्लेशः । अधिकतरः । तेषाम् । अव्यक्तासक्तचेतसाम् । अव्यक्ता । हि । गतिः । दुःखम् । देहवद्भिः । अवाप्यते ॥ ५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन निर्गुणब्रह्म विषेआसक्तहैचित्तजिनोंका तिनंपुरुषोंकूं अतिअधिक क्लेशहोवै जिसकारणतैं देहाभिमानीपुरुषोंनैं सोनिर्गुण ब्रह्म बहुतदुःख करिकै पाईताहै ॥ ५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सगुणब्रह्मकेचिंतनकरणेहारे जेअधिकारीपुरुष पूर्वकथनकरेथे ॥ तिनअधिकारीजनोंकूंभी सर्वविषयोंतैंआपणेमनकूंनिवृत्तकरिकै सगुणब्रह्म विषे तामनकेजोडनेविषे तथा निरंतर परमेश्वरकीप्रसन्नताअर्थ निष्कामकर्मपरायणहोणेविषे तथापरमसात्विकश्रद्धाकरिकैयुक्तहोणेंविषे अधिकक्लेशतौं प्राप्तहोवैहै॥ परंतु तिन सगुणब्रह्मकेचिंतनकरणेहारेपुरुषोंकूं अधिकतरक्लेशप्राप्तहोवैनही ॥ अर्थात् अत्यंतअधिकक्लेश प्राप्तहोवैनहीं ॥ और निर्गुणब्रह्मकेचिंतनपरायणहैचित्त जिनोंका ऐसेजे पूर्वउक्तश्रवणादिकसाधनोंवाले अधिकारीजनहैं तिन निर्गुणब्रह्मकेचिंतनपरायणअधिकारीजनोंकूंतै अधिकतरक्लेश प्राप्तहोवैहै ॥ अर्थात् अति शयकरिकैअधिक आयासरूपक्लेश प्राप्तहोवैहै ॥ अब इसपूर्वउक्त अर्थविषे श्रीभगवान् हेतुकहेहै (अव्यक्ताहिगतिर्दुःखमिति) जिसकारणतैं देहविषेअहंममअ भिमानवालेपुरुषोंनैं साअव्यक्तरूपगति बहुतदुःखकरिकै पाईतीहै ॥ तहां मुमुक्षजन तत्त्वज्ञानकरिकै प्राप्तहोवैं जिसकूं ऐसेजो गंतव्यफलरूपनिर्गुणब्रह्महै ताकानाम गतिहै ॥ तहांश्रुति ॥ (साकाष्ठासापरागतिः) अर्थयह ॥ सोनिर्गुण ब्रह्महीं सर्वकाअवधिरूपहै तथापरागतिरूपहै इति ॥ सोनिर्गुणब्रह्म नेत्रादिकइंद्रियोंका विषयहैं नहीं ॥ यातैं तानिर्गुणब्रह्मरूपगतिकूं अव्यक्तकह्याहै ॥ अर्थात् देहाभिमानीपुरुषोंनैं साअक्षरब्रह्मरूपगति बहुतदुःखकरिकैहींपाईतीहै ॥ तहां

प्रथमतौं विवेक वैराग्य शमदमादिषट्संपत्ति मुमुक्षता इनचतुष्टयसाधनोंकरिकैसंपन्नहोणा ॥ तिसतैंअनंतर विधिपूर्वकसर्वकर्मोंकासंन्यासकरिकै श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकेसमीपजाणा ॥ तिसतैंअनंतर तिसब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं वेदान्तवाक्योंकाश्रवणकरणा ॥ तिसतैंअनंतर तिसतिसवाक्यकेविचारकरिकैं तिस तिसभ्रमकी निवृत्तिकरणी ॥ इत्यादिकसाधनोंकेकरणेविषे तिनदेहाभिमानीपुरुषोंकूं महान्प्रयासकप्राप्ति प्रत्यक्षहीसिद्धहै ॥ इसीअभिप्रायकरिकै श्रीभगवान्नैं (क्लेशोधिकतरस्तेषाम्) यहवचन कथनकऱ्याहै ॥ यद्यपि सगुणब्रह्मकेजानणेहारेपुरुषोंकूं तथानिर्गुणब्रह्मकेजानणेहारेपुरुषोंकूं एकहींमोक्षरूपफलकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं निर्गुणब्रह्मवेत्तापुरुषोंतैं सगुणब्रह्मवेत्तापुरुषविषे श्रेष्ठताकहणीसंभवतीनहीं ॥ तथापि एकहींफलकूं जेपुरुष दुष्करउपायकरिकैप्राप्तहोवैहैं ॥ तिनपुरुषोंकीअपेक्षा करिकै तिसीफलकूं जेपुरुष सुगमउपायकरिकैप्राप्तहोवैहैं तेपुरुष श्रेष्ठकह्येजावैहैं यहभगवान्काअभिप्रायहै ॥ यद्यपि पूर्वनवमअध्यायकेद्वितीयश्लोकविषे (सुसुखंकर्तुमव्ययम्) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं अधिकारीपुरुषोंकूं सुखेनहीं ब्रह्मज्ञानकीप्राप्ति कथनकरीथी ॥ और ईहां (अव्यक्ताहिगतिर्दुःखम्) इसवचनकरिकै बहुतदुःखकरिकै तानिर्गुणब्रह्मकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ यातैं तिसपूर्वउत्तरवचनका परस्परविरोध प्रतीतहोवैहै ॥ तथापि श्रीभगवान्का यहअभिप्रायहै ॥ विवेकादिकसर्वसाधनोंकरिकैसंपन्न जेनिष्कामअधिकारीजनहैं ॥ तिन अधिकारीजनोंकूंतौं सुखेनहीं निर्गुणब्रह्मकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और जिनपुरुषोंका देहादिकोंविषेअहंममअभिमानहै ऐसे सकामपुरुषोंकूं बहुतदुःखकरिकैहीं सानिर्गुणब्रह्मकीप्राप्तिहोवैहै ॥ इसअभिप्रायकरिकैहीं श्रीभगवान्नैं ईहां (देहवद्भिः) इसवचनकरिकै देहाभिमानीपुरुषहीं कथनकरेहै ॥ ऐसेदेहाभिमानीपुरुषोंकूं सगुणब्रह्मकाचिंतनहींसुगमहै ॥ यातैं पूर्वउत्तरवचनोंका विरोधहोवैनहीं इति ॥ ५ ॥ ❀

॥ शंका ॥ हेभगवन् सगुणब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूं तथानिर्गुणब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूं जोकदाचित्एकहींफलकीप्राप्तिहोतीहोवै ॥ तौं क्लेशकीअल्पताकरिकै सगुणब्रह्मवेत्तापुरुषोंविषेतौं उत्कृष्टताहोवै ॥ और क्लेशकीअधिकताकरिकै निर्गुणब्रह्मवेत्तापुरुषोंविषे निकृष्टताहोवैं ॥ परंतु तिन दोनोंकूं एकफलकीप्राप्तिहोतीनहीं ॥ किंतु तिनदोनोंकूं भिन्नभिन्नफलकीहींप्राप्तिहोवैहै ॥ तहांनिर्गुणब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूंतौं अविद्याकीतथाताकेकार्यप्रपंचकीनिवृत्तिपूर्वक निर्विशेषपरमानंदब्रह्मरूपताकीप्राप्तिरूपफल प्राप्तहोवैहै ॥ और सगुणब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूंतौं अधिष्ठानरूपनिर्गुणब्रह्मका साक्षात्कारहैनहीं ॥ यातैं तिनोंकेअविद्याकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ किंतु तेसगुणब्रह्मवेत्तापुरुष हिरण्यगर्भरूपकार्यब्रह्मकेलोकविषेंजाइके तहां ऐश्वर्यविशेषरूपफलकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं तिन निर्गुणब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूं मोक्षरूपअधिकफलकीप्राप्तिवासतैजोआयासकीअधिकताहै ॥ सो आयासकीअधिकता तिननिर्गुणब्रह्मवेत्तापुरुषोंविषे न्यूनताकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ अल्पफलवासतै आयासकीअधिकताहीं न्यूनताकीप्राप्तिकरेहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्कहेहै ॥ समाधान ॥ हेअर्जुन सगुणब्रह्मकीउपासनाकरिकै निवृत्तहोइगएहैंसर्वप्रतिबंधजिनोंके

ऐसेजे सगुणब्रह्मकेउपासकहैं ॥ तिनउपासकपुरुषोंकूं ताब्रह्मलोकविषे केवल ऐश्वर्यविशेषकी प्राप्तिरूपफलहीं प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु तिनउपासकपुरुषोंकूं ताब्रह्मलोकविषे गुरुकेउपदेशतैंविनाहीं तथाश्रवणमनननिदिध्यासनादिकोंकीआवृत्तिरूपक्लेशतैंविनाहीं ईश्वरकीप्रसन्नताकरिकैसहकृत तथा आपेहींस्फुरणहुए ऐसेवेदांतवाक्यकरिकै तत्त्वज्ञानकीभीउत्पत्तिहोवैहै ॥ तिसतत्त्वज्ञानकरिकै कार्यसहितअविद्याकेनिवृत्तहुये तिसब्रह्मलोकविषेहींऐश्वर्यभोगकेअंतविषे तिनउपासकपुरुषोंकूं निर्गुणब्रह्मविद्याकाफलरूप परमकैवल्यमुक्ति प्राप्तहोवैहै ॥ यहवार्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (सएतस्माज्जीवघनात्परात्परंपुरीशयंपुरुषमीक्षते) ॥ अर्थयह ॥ प्राप्तहुआहैहिरण्यगर्भकाऐश्वर्यजिसकूं ऐसासोउपासकपुरुष तिसब्रह्मलोकके ऐश्वर्यभोगकेअंतविषे इनसर्वजीवोंकासमष्टिरूप तथाश्रेष्ठ ऐसेहिरण्यगर्भतैंभीपर कहीये विलक्षण तथाश्रेष्ठ तथाहृदयरूपगुहाविषेस्थित तथासर्वत्रपरिपूर्ण ऐसाजो प्रत्यक्अभिन्नअद्वितीयपरमात्मादेवहै तिसपरमात्मदेवकूं साक्षात्कारकरेहै॥ अर्थात् ताब्रह्मलोकविषे गुरुकेउपदेशतैंविना आपेहीं स्फुरणहुआजो वेदांतवाक्यरूपप्रमाणहै ताप्रमाणकरिकै सोउपासकपुरुष तापरब्रह्मकूंसाक्षात्कारकरेहै ॥ तासाक्षात्कारकरिकैहीं सोउपासकपुरुष ताब्रह्मलोकविषे कैवल्यमुक्तिकूंप्राप्तहोवैहै इति॥इसप्रकार पूर्वउक्तक्लेशतैंविनाहीं सगुणब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूं ईश्वरकेप्रसादतैं निर्गुणब्रह्मविद्याकामोक्षरूपफलप्राप्तहोवैहै ॥ इससर्वअर्थकूं श्रीभगवान् दोश्लोकोंकरिकैकथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) येतुसर्वाणिकर्माणिमयिसंन्यस्यमत्पराः ॥ अनन्येनैवयोगेनमांध्यायंतउपासते ॥ ६ ॥ तेषामहंसमुद्धर्त्तामृत्युसंसारसागरात् ॥ भवामिनचिरात्पार्थमय्यावेशितचेतसाम् ॥ ७ ॥ ये । तु । सर्वाणि । कर्माणि । मयि । संन्यस्य । मत्पराः । अनन्येन । एव । योगेन । माम् । ध्यायंतः । उपासते । तेषाम् । अहम् । समुद्धर्त्ता । मृत्युसंसारसागरात् । भवामि । नचिरात् । पार्थ । मयि । आवेशितचेतसाम् ॥ ६ ॥ ७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेपार्थ पुनः जेपुरुष सर्व कर्मोंकूं मैंसगुणब्रह्मविषे अर्पणकरिकै मेरेपरायणहुए तथा अनन्य समाधिरूपयोगकरिकै मैंपरमेश्वरकूं हीं चिंतनकरतेहुए मेरीउपासनाकरेहैं तिनमैंपरमेश्वरविषे आवेशितचित्तवालेपुरुषोंका मैंपरमेश्वर मृत्युयुक्तसंसारसमुद्रतैं शीघ्रहीं उद्धारकरणेहारा होवूंहूं ॥६॥ ७॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ ईहां (येतु) यावचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै ॥ सोतुशब्द पूर्वउक्त अर्जुनकीशंकाकेनिवृत्तकरणवासतैहै ॥ हेअर्जुन जेअधिकारीजन मैंसगुणपरमेश्वरविषे नित्य नैमित्तिक स्वाभाविक इत्यादिकसर्वकर्मोंकूंअर्पणकरिकै मत्परहुएहैं ॥ अर्थात् मैंभगवान्वासुदेवहींहूं पर क्या प्रकृष्टप्रीतिकाविषय जिनोंकूं तिनोंकानाम मत्परहै ॥ अथवा मैंपरमेश्वरहींहूं पर क्या सर्वकर्मोंकरिकैप्राप्य जिनोंकूं तिनोंकानाम मत्परहै ॥ अथवा मैंपरमेश्वरहींहूं पर क्या ध्यानका

विषय जिनोंकूं तिनोंकानाम मत्परहै ॥ अथवा मैंविश्वरूपपरमात्माहींहूं पर क्या आपणेतैंअन्य ज्ञातव्यद्रष्टव्यपदार्थ जिनोंकूं तिनोंकानाम मत्परहै ॥ अर्थात् आपणेतैंअन्यवस्तुविषे सर्वत्र मैंपरमेश्वरकूं देखणेहारेपुरुषोंकानाम मत्परहै ॥ ऐसेमत्परहुए जेअधिकारीपुरुष अनन्ययोगकरिकै मैंपरमेश्वरकूंचिंतनकरेहैं तहां मैंभगवान्वासुदेवकूंत्यागके नहींविद्यमानहैअन्यआलंबन जिसविषे ताकानाम अनन्यहै ॥ ऐसाअनन्यरूप जोसमाधिरूपयोगहै ॥ जिस अनन्यसमाधिरूपयोगकूं शास्त्रविषे एकांतभक्तियोग इसनामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ ऐसेअनन्ययोगकरिकै मैंपरमेश्वरकूं चिंतनकरतेहुए ॥ अर्थात् सर्वसौंदर्यकेसारकानिधानरूप तथा आनंदघनरूपविग्रहवाला तथादोभुजावोंकरिकै युक्त अथवा च्यारिभुजावोंकरिकैयुक्त तथासर्वजनोंकेमनकूंमोहनकरणेहारीमुरलीकूं अतिमनोहरसप्तस्वरोंकरिकै बजावणेहारा तथा शंख चक्र गदा पद्म इनच्यारोंकूं हस्तोंविषेधारणकरणेहारा ऐसाजो मैंभगवान्वासुदेवहूं ॥ तिस मैंभगवान्वासुदेवकूं चिंतनकरतेहुए ॥ अथवा नरसिंह राघव वामन इत्यादिरूप मैंपरमेश्वरकूं चिंतनकरतेहुए ॥ अथवा पूर्वदिखाएहुएविश्वरूप मैंपरमेश्वरकूं चिंतनकरतेहुए ॥ जेअधिकारीजन मैंपरमेश्वरकी उपासनाकरेहैं ॥ अर्थात् ऐसेमैंपरमेश्वरविषयक व्यवधानतैंरहित सजातीयचित्तवृत्तियोंकेप्रवाहकूं जेअधिकारीपुरुष करेहैं ॥ अथवा (उपासते) इसपदका यहदूसराअर्थकरणा ॥ जेअधिकारीजन मैंपरमेश्वरकेसमीपवर्त्तिपणेकरिकै स्थितहोवेहैं ॥ ऐसेजे मैंपरमेश्वरविषेआवेशितचित्तवालेपुरुषहैं ॥ अर्थात् पूर्वउक्त मैंस गुणब्रह्मविषेआवेशितकऱ्याहै क्या एकाग्रताकरिकैप्रवेशितकऱ्याहै चित्तजिनोंनैं तिनोंकानाम मय्यावेशितचेतस्है ॥ ऐसे सगुणब्रह्मकेचिंतनपरायणपुरुषोंका मैं भगवान्वासुदेव मृत्युसंसारसागरतैं समुद्धर्त्ता होवूंहूं ॥ तहां मृत्युकरिकैयुक्त जोमिथ्याअज्ञान तथाताअज्ञानकाकार्यभूत यहसंसारहै ॥ सोमृत्युयुक्तसंसारहीं प्रसिद्ध सागरकीन्यांई दुस्तरहोणेतैं सागररूपहै ॥ ऐसेमृत्युसंसारसागरतैं मैंपरमेश्वर तिनउपासकपुरुषोंका समुद्धर्त्ता होवूंहूं ॥ अर्थात् तिनउपासकपुरुषोंकूं मैंपरमेश्वर ज्ञान रूप आश्रयकी प्राप्तिकरिकै विनाहींआयासतैं तथाथोडेहींकालविषे सर्वप्रपंचकेबाधकाअवधिभूत शुद्धब्रह्मरूप ऊर्ध्वस्थानविषे धारणकरणेहारा होवूंहूं ॥ ईहां (हेपार्थ) यहजोअर्जुनकासंबोधन भगवान्नैं कह्याहै॥सोतूंअर्जुन हमारेपिताकेभगिनीकापुत्रहै तथाहमाराअनन्यभक्तहै ॥ यातैं इसमृत्युयुक्तसंसारसागरतैं तैंअर्जुन काभी मैंपरमेश्वर अवश्यकरिकैउद्धारकरूंगा तूं भयमतकर ॥ याप्रकारकेआश्वासनकरणेवासतै कथनकऱ्याहै इति ॥ ६ ॥ ७ ॥ ❋ ॥ तहां इतनैंग्रंथ करिकै सगुणब्रह्मकेउपासनाकीस्तुति कथनकरी ॥ अब तिस सगुणब्रह्मकीउपासनाका विधानकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) मय्येवमनआधत्स्वमयिबुद्धिंनिवेशय ॥ निवसिष्यसिमय्येवअतऊर्ध्वंनसंशयः ॥८॥ मयि । एव । मनः । आधत्स्व । मयि । बुद्धिं । निवेशय । निवसिष्यसि । मयि । एव । अतः । ऊर्ध्वं । न । संशयः ॥ ८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन तूं आपणे

मनकूं मैंसगुणब्रह्मविषेहीं स्थितकर तथाआपणेबुद्धिकूंभी मैंसगुणब्रह्मविषेहीं स्थितकर ताकरिकै इसदेहपाततैं अनंतर तूं मैंशुद्ध ब्रह्मविषे हीं अभेदरूपतैं निवासकरैंगा याकेविषे कोईसंशय तुमनैं नहींकरणा ॥ ८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन तूं आपणे संकल्पविकल्परूपमनकूं मैंसगुणब्रह्मविषेहीं स्थितकर ॥ अर्थात् तामनकेसर्ववृत्तियोंकूं मैंसगुणपरमेश्वरविषयक कर ॥ मैंपरमेश्वरतैंभिन्न दूसरेशब्दादिकाविषयोंकूं तामनकेवृत्तियोंकाविषयकरनहीं ॥ तथा आपणी निश्चयरूपबुद्धिकूंभी मैंसगुणब्रह्मविषेहीं स्थितकर ॥ अर्थात् ताबुद्धिकी सर्ववृत्तियां मैंसगुणब्रह्मविषयकहींकर ॥ तात्पर्ययह ॥ दूसरेसर्वविषयोंकापरित्यागकरिकै तूं सर्वकालविषे मैंसगुणब्रह्मकूंहीं चिंतनकर ॥ शंका ॥ हेभगवन् इस प्रकारतैं आपसगुण ब्रह्मकेचिंतनकरणेतैं हमारेकूं कौंनफल प्राप्तहोवैंगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् ताचिंतनकरणेकाफल कथनकरेहै ॥ (निवसिष्यसिइति) हेअर्जुन इसप्रकारतैं जबीतूं निरंतर मैंसगुणब्रह्मकाचिंतनकरैंगा ॥ तबी मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेआत्मज्ञानकूंप्राप्तहोइकै तूं इसदेहकेपाततैंअनंतर मैंनिर्गुणशुद्धब्रह्मविषेहीं अभेदरूपकरिकै निवासकरैंगा ॥ इसप्रकारके सगुणब्रह्मकीउपासनाकेमोक्षरूपफलविषे तुमनैं किंचित्मात्रभी संशयनहींकरणा ॥ अर्थात् तासगुणब्रह्मकेउपासककूं तिसमोक्षरूपफलकीप्राप्तिविषेतुमनैंकिंचित्मात्रभी प्रतिबंधककीशंका नहींकरणी ॥ ईहां यद्यपि (एवअतऊर्ध्वम्) इसवचनविषे (एवातऊर्ध्वम्) इसप्रकारकीसंधिकरणीचाहीतीथी ॥ तथापि श्रीभगवान्नैं जोईहां संधिनहींकरी ॥ सो श्लोककेपूर्णवासतैं नहींकरी इति ॥ ८ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे सगुणब्रह्मकेध्यानकाप्रकार कथनकऱ्या ॥ अब तिससगुणब्रह्मकेध्यानकरणेविषेभी अशक्त जेअधिकारीजनहैं ॥ तिनअधिकारीजनोंनैं ताअशक्तिकीतारतम्यताकरिके प्रथमतौं प्रतिमादिकबाह्यवस्तुवोंविषे भगवान्केध्यानकाअभ्यासकरणा ॥ अर्थात् तिनप्रतिमादिकोंविषे भगवत्बुद्धिकरणी ॥ और तिनप्रतिमादिकोंकेध्यानकरणेविषेभी जेपुरुष अशक्तहैं ॥ तिनअधिकारीजनोंनैंतौं श्रवणकीर्त्तनादिरूप भागवतधर्मोंका अनुष्ठानकरणा ॥ और तिनभागवतधर्मोंकेअनुष्ठानकरणेविषेभी जेपुरुष अशक्तहैं ॥ तिनअधिकारी जनोंनैंतौं सर्वकर्मोंकेफलकापरित्यागकरणा ॥ अर्थात् फलकीइच्छातैंरहितहोइकै कर्मोंकूंकरणा ॥ इसप्रकारके तीनसाधनोंकूं तनिश्लोकोंकरिकै श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) अथचित्तंसमाधातुंनशक्नोषिमयिस्थिरम् ॥ अभ्यासयोगेन ततोमामिच्छाप्तुंधनंजय ॥ ९ ॥ अथ । चित्तं । समाधातुं । न । शक्नोषि । मयि । स्थिरम् । अभ्यासयोगेन । ततः । माम् । इच्छ । आप्तुं । धनंजय ॥ ९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेधनंजय जेबीतूं मैंसगुणब्रह्मविषे आपणेचित्तकूं स्थिर स्थापनकरणेकूं नहीं समर्थहोवैं तबी अभ्यासयोगकरिकै मैंपरमेश्वरकूं प्राप्तहोणे अर्थ इच्छाकर ॥ ९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ ईहां श्लोकके आदिविषेस्थितजो अथ यहशब्दहै ॥ सोअथशब्द पूर्वउक्तपक्षकीअपेक्षाकरिकै दूसरेपक्षकेआरंभकाबोधकहै ॥ हेधनंजय जबीतूं मैंस गुणब्रह्मविषे जैसे चित्त स्थिरहोवै तैसे आपणेचित्तकूं स्थापनकरणेविषे अशक्तहोवैं ॥ तबीतूं अभ्यासयोगकरिकै मैंपरमेश्वरकूं प्राप्तहोणेवासतै इच्छाकर ॥ अर्थात् प्रयत्नकर ॥ तहां सुवर्णादिकधातुमय अथवा पाषाणमय जेविष्णुशिवादिकोंकीप्रतिमाहैं ॥ तिन बाह्य प्रतिमादिकआलंबनविषे सर्वओरतैंनिवृत्तकऱ्येहुएचित्तका जोपुनःपुनःस्थापनहै ताकानाम अभ्यासहै तिसअभ्यासपूर्वक जो समाधिरूपयोगहै ताकानाम अभ्यासयोगहैं ॥ ऐसेअभ्यासयोगकरिकै मैंपरमेश्वरकूं प्राप्तहोणे वासतै तूंप्रयत्नकर ॥ ईहां श्रीभगवानूनैं (हेधनंजय) इससंबोधनकेकहणेकरिकै यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ युधिष्ठिरराजाके राजसूययज्ञवासतैं बहुतशत्रुवोंकूं जीतकरिकै तूं धनकूंलेआवताभयाहैं ॥ यातैं तुमारा धनंजय यहनाम होताभयाहै ॥ ऐसा धनंजयनामवालातूं अर्जुन एकमनरूपशत्रुकूंजीतिकै तत्त्वज्ञानरूपधनकूं हरणकरैंगा यहवार्त्ता तुमारेविषे कोईआश्चर्यरूप नहींहै इति ॥ ९ ॥ ❀ ॥

(मू०श्लो०) अभ्यासेप्यसमर्थोसिमत्कर्मपरमोभव॥मदर्थमपिकर्माणिकुर्वन्सिद्धिमवाप्स्यसि ॥१०॥ अभ्यासे । अपि । असमर्थः । असि । मत्कर्मपरमः । भव । मदर्थम् । अपि । कर्माणि । कुर्वन् । सिद्धिम् । अवाप्स्यसि ॥ १० ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन पूर्वउक्तअभ्यासविषे भी जबीतूं असमर्थ होवै तबीतूं भागवतकर्मपरायण होउ मैंपरमेश्वरअर्थ कर्मोंकूं भी करताहुआ तूं ब्रह्मभावकूं प्राप्तहोवैंगा ॥ १० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वश्लोकविषेकथनकऱ्याजोअभ्यासहै ॥ ताअभ्यासकेकरणेविषेभी जबीतूं असमर्थहोवैं ॥ तबी तूं मत्कर्मपरम होउ ॥ तहां मैंपरमेश्वरकी प्रसन्नताअर्थ जेकर्महैं तिनकर्मोंकानाम मत्कर्महै ॥ तेभगवत्कीप्रसन्नता वासतैं भजनरूपकर्म शास्त्रविषे नवप्रकारकेकहेहैं ॥ तहांश्लोक ॥ (श्रवणंकीर्तनंविष्णोः स्मरणंपादसेवनम् ॥ अर्चनंवंदनंदास्यंसख्यमात्मनिवेदनम्) ॥ अर्थयह ॥ सर्वत्रव्यापकविष्णुभगवान्के रामकृष्णादिकनामोंकूंश्रवणकरणा ॥ १ ॥ तथा ताविष्णुकेनामोंकूं आपणेमुखकरिकैकथनकरणा ॥ २ ॥ तथा आपणेमनकरिकै ताविष्णुका सर्वदा स्मरणकरणा ॥ ३ ॥ तथाताविष्णुकेपादोंकासेवनकरणा ॥ ४ ॥ तथा चंदन अक्षत पुष्प धूप दीप इत्यादिकपदार्थोंकरिकै ताविष्णुका अर्चनकरणा ॥ ५ ॥ तथा शरीर मन वाणीकरिकै ताविष्णुकेतांई नमस्काररूपवंदनकरणा ॥६॥ तथा ताविष्णुका दासभावकरणा ॥७॥ तथा ताविष्णुका सखाभावकरणा ॥ ८ ॥ तथा ताविष्णुकेतांई आपणेशरीररूपआत्माका अर्पणकरणा ॥ ९ ॥ ईहां यद्यपि सर्वत्रव्यापकविष्णुके साक्षात् पादोंकासेवन तथाअर्चन संभवतानहीं ॥ तथापि ॥ (द्वेरूपेवासुदेवस्यचलंचाचलमेवच ॥ चलंसंन्यासिनोरूपमचलंप्रति

मादिकम् ॥) इसशास्त्रकेवचनविषे विष्णुकेदोरूपकथनकऱ्येहैं ॥ तहां संन्यासीतौं तिसविष्णुका चलरूपहै और सुवर्णादिकधातुमय तथापाषाणमय प्रतिमादिक ताविष्णुका अचलरूपहै तासंन्यासीके अथवा विष्णुकीप्रतिमाके पादोंकासेवन तथाअर्चन संभवैहैइति ॥ इसीश्रवणादिकनवप्रकारकेभजनकूं शास्त्रविषे भागवत धर्म कहेहैं ॥ ऐसे भागवतधर्मनामा मत्कर्मोंकेकरणेविषे तूं तत्परहोउ ॥ इसप्रकार मैंपरमेश्वरकीप्रसन्नतावासतै तिनश्रवणकीर्त्तनादिक भागवतकर्मोंकूंभीकरताहुआ तूं अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा तथाआत्मज्ञानकीप्राप्तिद्वारा निर्गुणब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपसिद्धिकूं प्राप्तहोवैंगाइति ॥ १० ॥ ❀ ॥

(मू० श्लो०) अथैतदप्यशक्तोसिकर्त्तुंमद्योगमाश्रितः ॥ सर्वकर्मफलत्यागंततःकुरुयतात्मवान् ॥ ११ ॥ अथ । एतत् । अपि । अशक्तः । असि । कर्त्तुं । मद्योगम् । आश्रितः । सर्वकर्मफलत्यागं । ततः । कुरु । यतात्मवान् ॥ ११ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जबी तूं इसपूर्वउक्तभागवतकर्मके भी करणेकूं अशक्त होवैं तबी मैंपरमेश्वरकेयोगकूं आश्रयणकरताहुआ तथायतात्मवान् हुआ तूं सर्वकर्मोंकेफलकेत्यागकूं कर ॥ ११ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन बाह्यविषयोंविषेप्रीतिमान् ऐसाजोचित्तहै ॥ ऐसेबहिर्मुखचित्तवालाहोणेतैं जबी तूं पूर्वश्लोकउक्त श्रवणकीर्त्तनादिकभागवतधर्मोंकूंभी संपादनकरणेविषेअसमर्थहोवैं ॥ तबीतूं मद्योगकूंआश्रितहुआ अर्थात् एकमैंपरमेश्वरकेशरणताकूंआश्रयणकरताहुआ ॥ अथवा मैंपरमेश्वरविषे जोसर्वकर्मोंकाअर्पणहै ताकानाम मद्योगहै ऐसेमद्योगकूंआश्रयणकरताहुआ तथा यतात्मवान्हुआ ॥ ईहां शब्दादिकसर्वविषयोंतैंनिवृत्तकरेहैंश्रोत्रादिकसर्वइंद्रियजिसनैं ताकानाम यतहै ॥ औरविवेकीकानाम आत्मवान्है ॥ यतहोवै सोईहीं आत्मवान्होवै ताकानामयतात्मवान्है ॥ अर्थात् श्रोत्रादिकसर्वइंद्रियोंकेनिरोधवाले विवेकीपुरुषकानाम यतात्मवान्है ॥ ऐसायतात्मवान्हुआ तूंअर्जुन उक्तपूर्व श्रौतस्मार्त्तरूपसर्वकर्मोंकेफलकेत्यागकूं कर अर्थात् तिनकर्मोंकेफलकीइच्छाका तूंपरित्यागकर इति ॥ ॥ ११ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्व सगुणब्रह्मकीउपासना अभ्यासयोग भागवतधर्म कर्मकेफलकात्याग यहच्यारिसाधन अधिकारीकेभेदतैं विधानकरे ॥ तिनच्यारिसाधनोंके मध्यविषे अंतमेंविधानकऱ्याजो कर्मोंकेफलकात्यागरूपसाधनहै ॥ तिसत्यागरूपसाधनविषेहीं पूर्वउक्तसाधनोंकेविधानका परिअवसानहै ॥ याकारणतैं श्रीभगवान् इससर्वकर्मोंके फलकात्यागरूपसाधनकीस्तुतिकथनकरेहै ॥ तिसकर्मोंकेफलत्यागरूपसाधनविषे अधिकारीजनोंकीप्रवृत्तिकरणेवासतै ॥

(मू०श्लो०) श्रेयोहिज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानंविशिष्यते ॥ ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छांतिरनंतरम् ॥ १२ ॥ श्रेयः । हि । ज्ञानम् । अभ्यासात् । ज्ञानात् । ध्यानम् । विशिष्यते । ध्यानात् । कर्मफलत्यागः । त्यागात् । शांतिः । अनंतरम् ॥ १२ ॥

(इतिपदच्छेदः)॥ हेअर्जुन अभ्यासतैं ज्ञान हीं श्रेष्ठहै ताज्ञानतैं ध्यान श्रेष्ठहै ताध्यानतैं कर्मोंकेफलका त्यागश्रेष्ठहै जिसंत्यागतैं अनंतर मोक्षरूपशांति होवैहै ॥ १२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन ज्ञानकीप्राप्तिवासतै कऱ्याजो श्रवणकाअभ्यासहै ॥ तिसअभ्यासतै ज्ञानहीं श्रेष्ठहै ॥ अर्थात् श्रवणकरिकै तथामननकरिकैं उत्पन्नभयाजो आत्मविषयक निश्चयरूपज्ञानहै ॥ जिसज्ञानकूंश्रवणज्ञान तथामननज्ञान कहेहैं ॥ तथा जोज्ञान प्रमाणगतअसंभावनाका तथाप्रमेयगत असंभावनाका निवर्त्तकहै ॥ ऐसाज्ञानतिसअभ्यासतैं श्रेष्ठहै ॥ और तिस श्रवणमननजन्यज्ञानतैं निदिध्यासनरूपध्यान अत्यंतश्रेष्ठहै ॥ काहेतैं सोनिदिध्यासनरूपध्यान व्यवधानतैं रहितहुआहीं आत्मसाक्षात्कारकाहेतुहै ॥ और सोश्रवणज्ञान तथामननज्ञान तानिदिध्यासनद्वारा आत्मसाक्षात्कारकाहेतुहै ॥ व्यवधानतैंरहितहुआ सोज्ञान आत्म साक्षात्कारका हेतुहैनहीं ॥ यातैं तिसज्ञानतै निदिध्यासनरूपध्यानकीश्रेष्ठतायुक्तहै ॥ इसप्रकारतैं सोनिदिध्यासनरूपध्यान यद्यपि सर्वसाधनोंतैं श्रेष्ठहै ॥ तथापि अज्ञानीपुरुषनैं कऱ्याजो सर्वकर्मोंकेफलकात्यागहै सोकर्मोंकेफलकात्याग तिसअज्ञानीपुरुषकूं ताध्यानतैंभीश्रेष्ठहै ॥ इसअभिप्रायकरिकै श्रीभगवान् तिस कर्मफलकेत्यागकी स्तुतिकरेहैं (ध्यानात्कर्मफलत्यागइति) हेअर्जुन अज्ञानीपुरुषनैं कऱ्याजो कर्मोंकेफलकात्यागहै ॥ सोकर्मोंकेफलकात्याग तिसअज्ञानी पुरुषकूं तिसनिदिध्यासनरूपध्यानतैंभी श्रेष्ठहै ॥ काहेतैं निगृहीतचित्तवालेपुरुषनैं कऱ्याजो सर्वकर्मोंकेफलकात्यागहै ॥ तिसत्यागतैं इसअधिकारीपुरुषकूंअज्ञानसहित सर्वसंसारका उपशमरूपशांति व्यवधानतैंविनाहीं प्राप्तहोवैहै ॥ साशांति कालांतरकीअपेक्षाकरैनहीं ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (यदासर्वे प्रमुच्यंतेकामायेऽस्यहृदिस्थिताः ॥ अथमर्त्योऽमृतोभवत्यत्रब्रह्मसमश्नुते ॥) अर्थयह ॥ इसजीवकेहृदयविषेस्थित जेकामहैं तेसर्वकाम जिसकालविषेनिवृत्तहोवैहैं॥ तिसीकालविषेहीं यहजीव अमृतहोवैहै तथाइसोदेहविषे ब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ इत्यादिकश्रुतिवचनोंतैं सर्वकामोंकेत्यागविषे मोक्षकासाधनपणाजान्याजावैहै॥ और इसगीताशास्त्रविषेभी स्थितप्रज्ञपुरुषके लक्षणोंविषे (प्रजहातियदाकामान्सर्वान्पार्थमनोगतान्) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं आपही सर्वकामोंकेत्या गविषे मोक्षकासाधनपणा कथनकऱ्याहै ॥ यद्यपि श्रुतिविषे तथास्थितप्रज्ञकेलक्षणोंविषे सर्वकामोंकेत्यागकूंहीं मोक्षकासाधनपणा कथनकऱ्याहै ॥ कर्मों केफलकेत्यागकूं मोक्षकासाधनपणा कह्यानहीं ॥ तथापि तेकर्मकेफलभी कामरूपहींहैं ॥ यातैं तिनकर्मोंकेफलोंकाजोत्यागहै ॥ सोत्यागभी कामकात्यागहीं है ॥ ताकामत्यागस्वरूप सामान्यधर्मकूंलेके श्रीभगवान्नैं ताकर्मफलकेत्यागकी कामत्यागके फलकरिकै स्तुतीकरीहै ॥ जैसे पूर्व अगस्त्यब्राह्मण समु द्रकूंपानकरताभयाहै ॥ तथा परशुरामब्राह्मण इसपृथिवीकूं क्षत्रियराजावोंतैंरहितकरताभयाहै ॥ सोब्राह्मणपणाइदानींकालकेब्राह्मणोंविषेभीहै ॥ यातैं ताब्राह्मण

त्वसामान्यधर्मकूंलैके इदानींकालकेब्राह्मणभी अपरिमितपराक्रमवत्ताकरिकै स्तुतिकऱ्येजावैहैं ॥ तैसे सोकर्मकेफलकात्यागभी कामत्यागकेफलकरिकै स्तुतिकऱ्याजावैहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (श्रेयोहिज्ञानमभ्यासात्) इसश्लोकका यहअर्थकऱ्याहै ॥ निदिध्यासनरूपअभ्यासतैं श्रवणमननजन्यपरोक्ष ज्ञान श्रेष्ठहै ॥ और तिसपरोक्षज्ञानतैं विष्णुकेनामोंकाश्रवणकीर्त्तनरूपध्यान श्रेष्ठहै ॥ और तिसध्यानतैं कर्मोंकेफलकात्याग श्रेष्ठहै ॥ कैसाहैसोकर्मोंकेफलका त्याग ॥ जिसत्यागतैंउत्तर व्यवधानतैंविनाहीं चित्तशुद्धिआदिकोंकीउत्पत्तिद्वारा मोक्षरूपशांति प्राप्तहोवैहै ॥ ईहां यद्यपि निदिध्यासनरूपअभ्यासकीअपेक्षाकरिकै सोपरोक्षज्ञान बाह्यसाधनहै ॥ और तापरोक्षज्ञानकीअपेक्षाकरिकै सोश्रवणकीर्त्तनादिरूपध्यान बाह्यसाधनहै ॥ और ताध्यानकीअपेक्षाकरिकै सोकर्मोंकेफलका त्याग बाह्यसाधनहै ॥ यातैं अंतरसाधनकीअपेक्षाकरिकै बाह्यसाधनविषे श्रेष्ठताकहणी असंगतहै ॥ तथापि अंतरसाधनकीअपेक्षाकरिकै बाह्यसाधन करणेकूं सुगमहोवैहै ॥ और सोपानक्रमकरिकै बाह्यसाधनकीप्राप्तिपूर्वकहीं अंतरसाधनकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं श्रीभगवान्नैं तिनबाह्यसाधनोंविषे अधिकारीजनोंकीप्रवृत्ति करावणेवासतै पूर्वपूर्वसाधनकीअपेक्षाकरिकै तिसतिसबाह्यसाधनविषे श्रेष्ठताकथनकरीहै इति ॥ १२ ॥ ❀ ॥ तहांपूर्व मंदअधिकारीकेप्रति अतिदुष्कर होणेतैं निर्गुणअक्षरब्रह्मकेउपासनाकीनिंदाकरिकै अतिसुगम सगुणब्रह्मकीउपासना विधानकरी ॥ तासगुणब्रह्मकीउपासनाकेकरणेविषेभी जेपुरुष असमर्थहैं ॥ तिनपुरुषोंके अशक्तिकीतारतम्यताकेअनुसार दूसरेभी अभ्यासादिकतीनसाधन श्रीभगवान्नैं विधानकऱ्ये ॥ तासगुणब्रह्मकीउपासनाकेविधानकरणेविषे तथा अभ्यासादिकतीनसाधनोंकेकहणेविषे श्रीभगवान्का यह अभिप्रायहै ॥ यहअधिकारीजन किसीभीप्रकारकरिकै सर्वप्रतिबंधकोंतैंरहितहोइकै तथाउत्तमअधि कारीहोइकै सर्वसाधनोंकाफलरूप निर्गुणब्रह्मविद्याविषे प्रवेशकरे इति ॥ काहेतैं साधनोंकाजोविधानहोवैहै सोफलकीप्राप्तिवासतैहींहोवैहै ॥ फलतैंविना साधनोंका विधान होवैनहीं ॥ यातैं ईहां श्रीभगवान्नैं जो सगुणब्रह्मकीउपासना तथा अभ्यासादिकतीनसाधन विधानकरेहैं ॥ तेसर्वसाधन निर्गुणब्रह्मविद्यारूपफलकीप्राप्ति वासतैहीं विधानकरेहैं ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (निर्विशेषंपरंब्रह्मसाक्षात्कर्त्तुमनीश्वराः ॥ येमंदास्तेनुकंप्यंतेसविशेषनि रूपणैः ॥ १ ॥ वशीकृतेमनस्येषांसगुणब्रह्मशीलनात् ॥ तदेवाविर्भवेत्साक्षादपेतोपाधिकल्पनम् ॥ २ ॥) ॥ अर्थयह ॥ जेमंदअधिकारीजन निर्विशेषपर ब्रह्मकेसाक्षात्कारकरणेकूं समर्थ नहींहोवैहैं ॥ तेमंदअधिकारीजन सगुणब्रह्मकेनिरूपणकरिकै अनुग्रहकेविषयकरीतेहैं ॥ अर्थात् श्रुतिभगवतीनैं तथाब्रह्मवेत्ता पुरुषोंनैं तिनमंदअधिकारीपुरुषोंकेऊपरि अनुग्रहकरिकै सगुणब्रह्मकानिरूपणकरीताहै इति ॥ १ ॥ तिससगुणब्रह्मकेध्यानतैं जबी तिनमंदअधिकारी पुरुषोंकामन वशहोवैहै ॥ तबी तिनअधिकारीजनोंकूं सर्वउपाधियोंकीकल्पनातैंरहित तिसनिर्गुणब्रह्मकासाक्षात्कारहोवैहै इति ॥ २ ॥ यहवार्त्ता पतंजलिभगवान्नैंभी योग

सूत्रोंविषेकथनकरीहै ॥ तहांसूत्रम् ॥ (समाधिसिद्धिरीश्वरप्रणिधानात् ॥ ततःप्रत्यक्चेतनाधिगमोप्यंतरायाभावश्च ॥) अर्थयह ॥ इसअधिकारीजनकूं ईश्वरके चिंतनरूपईश्वरप्रणिधानतैं समाधिकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तिसईश्वरकेप्रणिधानतैंहीं इसअधिकारीपुरुषकूं प्रत्यक्चेतनकासाक्षात्कारहोवैहै ॥ तथा विघ्नरूपअंतरायोंका अभावहोवैहै इति॥ यातैं पूर्व (क्लेशोधिकतरस्तेषाम्) इत्यादिकवचनोंकरिकै जो निर्गुणब्रह्मकेउपासनाकी निंदाकरीथी ॥ सोनिंदा सगुणब्रह्मकीउपासनाकेस्तुतिवासतै करीथी ॥ कोई निर्गुणब्रह्मकीउपासनाकेनिषेधकरणेवासतै सानिंदा नहींकरीथी ॥ जैसे उदितहोमकेविधानविषे जो अनुदितहोमकीनिंदाकरीहै ॥ सानिंदा तिस उदितहोमकीस्तुतिवासतैहीं करीहै ॥ कोई अनुदितहोमकेनिषेधकरणेवासतै सानिंदा नहींकरीहै ॥ तहां सूर्यकेउदयहुए जोहोम कऱ्याजावैहै ताकूं उदितहोम कहेहैं ॥ और सूर्यकेउदयहुएतैंप्रथमजोहोम कऱ्याजावैहै ताकूं अनुदितहोमकहेहैं ॥ तैसे सगुणउपासनाकेविधानविषे जोनिर्गुण उपासनाकीनिंदाकरीहै ॥ सानिंदाभी तिससगुणउपासनाकी स्तुतिवासतैहै ॥ कोई निर्गुणउपासनाकेनिषेधवासतै सानिंदानहींहै ॥ काहेतैं शास्त्रकारोंनैं यहन्याय कह्याहै ॥ (नहिनिंदानिंद्यंनिंदितुंप्रवर्त्ततेऽपितुविधेयंस्तोतुम्) ॥ अर्थयह ॥ शास्त्रविषेजोनिंदावचनहोवैहैं ॥ तेनिंदावचन तिसनिंद्यवस्तुकेनिंदनकरणेवासतै प्रवृत्तनहींहोवैहैं ॥ किंतु प्रसंगविषेप्राप्त विधेय अर्थकेस्तुतिकरणेवासतै तेनिंदावचन प्रवृत्तहोवैहैं इति ॥ यातैं निर्गुणअक्षरब्रह्मकेउपासकहीं वास्तवतैं योगवित्तमहैं ॥ ऐसेनिर्गुणब्रह्मवेत्तापुरुषहीं श्रीभगवान्नैं (प्रियोहिज्ञानिनोत्यर्थमहंसचममप्रियः । उदाराःसर्वएवैतेज्ञानीत्वात्मैवमेमतम्) इत्यादिकवचनोंकरिकै पुनःपुनः श्रेष्ठतारूपकरिकै कथनकरेहैं ॥ हेअर्जुन तुमनैंभी अधिकारकूंसंपादनकरिकै तिननिर्गुणब्रह्मवेत्तापुरुषोंकाहीं ज्ञान तथासर्वधर्म अनुसरणकरणेयोग्यहै॥ इसप्रकारतैं अर्जुनकेप्रति बोधकरणेकीइच्छाकरताहुआ तथाता अर्जुनकेपरम हितकीइच्छा करताहुआ श्रीकृष्णभगवान् सप्तश्लोकोंकरिकै तिन अभेददर्शनवाले तथाकृतकृत्यभावकूंप्राप्तहुए निर्गुणब्रह्मकेउपासकोंकी स्तुतिकरेहै ॥

(मू०श्लो०) अद्वेष्टासर्वभूतानांमैत्रःकरुणएवच ॥ निर्ममोनिरहंकारःसमदुःखसुखःक्षमी ॥ १३ ॥ अद्वेष्टा । सर्वभूतानां । मैत्रः । करुणः । एव । च । निर्ममः । निरहंकारः । समदुःखसुखः । क्षमी ॥ १३ ॥ (इतिपदच्छेदः)॥हेअर्जुन जोपुरुष सर्वभूतोंका अद्वेष्टाहै तथामैत्रीवाला हीं है तथा करुणावालाहै तथा निर्ममहै तथा निरहंकारहै तथासमहैदुःखसुखजिसकूं तथाक्षमावालाहै ॥ १३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सोनिर्गुणब्रह्मवेत्तापुरुष स्थावरजंगमरूपसर्वभूतोंकूं आपणाआत्मारूपकरिकैदेखैहै ॥ यातैं जेपदार्थ आपणेदुःखकाभीहेतुहै ॥ तिसपदार्थविषेभी तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकी प्रतिकूलबुद्धिहोवैनहीं ॥ और जिसवस्तुविषे यहवस्तु हमारेदुःखकासाधनहै याप्रकारकीप्रतिकूलबुद्धिहोवैहै ॥ तिसवस्तुविषेहीं

द्वेषहोवैहै ॥ ताप्रतिकूलबुद्धितैंविना द्वेषहोवैनहीं ॥ ताप्रतिकूलबुद्धिकेअभावहुए सोतत्त्ववेत्तापुरुष तिनसर्वभूतोंका द्वेषकरताहोवैनहीं ॥ किंतु सोतत्त्ववेत्तापुरुष तिनसर्वभूतोंविषे मैत्रीवालाहींहोवैहै ॥ अर्थात् तिनसर्वभूतोंविषे स्नेहवालाहींहोवैहै ॥ अबतामैत्रीभावविषे हेतुकहेहैं (करुणःइति) हेअर्जुन जिसकारणतैं सोतत्त्ववेत्तापुरुष करुणावालाहै ॥ इसकारणतैंसोतत्त्ववेत्तापुरुष तिनसर्वभूतोंविषे मैत्रीवालाहै ॥ तहां दुःखीप्राणीयोंविषे जोदयाकरणींहै ताकानाम करुणाहै ॥ ऐसी करुणावाले पुरुषका नाम करुणहै ॥ अर्थात् सोतत्त्ववेत्तापुरुष सर्वभूतोंकेताई अभयदानदेणेहारा परमहंससंन्यासीहै ॥ तथा सोतत्त्ववेत्तापुरुष निर्ममहै ॥ अर्थात् आपणेदेहाविषेभी यहदेह हमाराहै याप्रकारकीममताबुद्धितैंरहितहै ॥ तथा सोपुरुष निरहंकारहै ॥ अर्थात् जैसे अज्ञानीपुरुष श्रेष्ठआचारकरिकै तथावेदविद्यादिकों करिकै अहंकारकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे सोतत्त्ववेत्तापुरुष तिन श्रेष्ठआचार विद्यादिकोंकरिकै अहंकारकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ तथा द्वेष राग इनदोनोंतैंरहितहोणेतैं समहै दुःखसुखदोनोंजिसकूं ॥ इसीकारणतैंहीं सोतत्त्ववेत्तापुरुष क्षमावालाहै ॥ अर्थात् ताडनादिकोंकरिकैभी विक्रियाकूंप्राप्तहोतानहीं इति ॥ १३ ॥ ❀ ॥ अब पूर्वश्लोकविषेकथनकऱ्येहुए निर्गुणब्रह्मवेत्तापुरुषके अन्यभीविशेषणोंकूं कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) संतुष्टःसततंयोगीयतात्मादृढनिश्चयः ॥ मय्यर्पितमनोबुद्धिर्योमद्भक्तःसमेप्रियः ॥ १४ ॥ संतुष्टः । सततम् । योगी । यतात्मा । दृढनिश्चयः । मयि । अर्पितमनोबुद्धिः । यः । मद्भक्तः । सः । मे । प्रियः ॥ १४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जो पुरुष सर्वदा संतुष्टहै तथासमाहितचित्तवालाहै तथावशकऱ्याहैसंघातजिसनैं तथादृढहै निश्चयजिसका तथामैंपरमेश्वरविषे अर्पण कऱ्येहैंमनबुद्धिजिसनैं ऐसाजो मेराभक्तहै सोभक्त मैंपरमेश्वरकूं प्रियहै ॥ १४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोपुरुष सर्वकालविषे संतुष्टहै ॥ अर्थात् शरीरकीस्थितिकेकारणरूप जेअन्नवस्त्रादिकपदार्थहै तिनअन्नादिकपदार्थोंकी प्राप्तिविषे अथवा अप्राप्तिविषे जोपुरुष संतोषवालाहै ॥ ईहां (सततम्) इसपदका सर्वविशेषणोंकेसाथि संबंधकरणा ॥ तथा जोपुरुष सर्वदा योगीहै अर्थात् सर्वकालविषे जोपुरुष समाहितचित्तवालाहै ॥ तथा जोपुरुष यतात्माहै ॥ अर्थात् आपणेवशकऱ्याहैशरीरइंद्रियादिरूपसंघात जिसनैं ॥ तथा जोपुरुष दृढनिश्चयहै ॥ तहां दृढहै क्या कुतार्किकपुरुषोंनैं अभिभवकरणेकूंअशक्यहोणेतैंस्थिरहै निश्चय क्या अकर्त्ताअभोक्तासच्चिदानंदअद्वितीयब्रह्ममैंहूं याप्रकारकाज्ञान जिसका ताकानाम दृढनिश्चयहै ॥ अर्थात् स्थितप्रज्ञपुरुषकानाम दृढनिश्चयहै ॥ तथा मैंनिर्गुणशुद्धब्रह्मविषे समर्पणकऱ्याहै संकल्पविकल्पात्मकमन तथा निश्चयात्मकबुद्धि जिसनैं ॥ इसप्रकारका जोहमारा भक्तहै ॥ अर्थात् सर्वउपाधितैंरहित शुद्धअक्षरब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकै जानणेहारा जोतत्त्ववेत्तापुरुषहै ॥ सोब्रह्मवेत्ता

पुरुष मैंपरमेश्वरकूं आपणाआत्मारूपहोणेतैं अत्यंतप्रियहैं ॥ याप्रकारका अर्थ अगलेश्लोकोंविषेभी जानलेणा इति ॥ १४ ॥ ❀ ॥ अब पुनःभी तिसतत्त्ववेत्तापुरुषके विशेषणोंकूं निरूपणकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) यस्मान्नोद्विजतेलोकोलोकान्नोद्विजतेचयः ॥ हर्षामर्षभयोद्वेगैर्मुक्तोयःसचमेप्रियः ॥ १५ ॥ यस्मात् । न । उद्विजते । लोकः । लोकात् । न । उद्विजते । च । यः । हर्षामर्षभयोद्वेगैः । मुक्तः । यः । सः । च । मे । प्रियः ॥ १५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेअर्जुन जिसपुरुषतैं यहलोक नहीं संतापकूंप्राप्तहोवैहै तथा जोपुरुष तिसलोकतैं नहीं संतापकूंप्राप्तहोवैहै तथा जोपुरुष हर्षअमर्ष भयउद्वेगइनच्यारोंनैं परित्यागकर्याहै सोतत्त्ववेत्तापुरुष मैंपरमेश्वरकूं अत्यंतप्रियहै ॥ १५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सर्वप्राणीयोंकूंअभयकीप्राप्तिकरणेहारे जिसपरमहंससंन्यासीतैं कोईभीप्राणी संतापकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ अर्थात् जोतत्त्ववेत्तापुरुष किसीभी प्राणीकूं शरीरमनवाणीकरिकै पीडाकीप्राप्तिकरतानहीं ॥ तथा विनाहीं अपराधतैं संतापकीप्राप्तिकरणेहारे जे दुष्टप्राणीहैं ॥ ऐसेदुष्टप्राणीरूपलोकतैं जोपुरुष संतापकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ जिसकारणतैं सोतत्त्ववेत्तापुरुष सर्वत्र अद्वैतआत्मदर्शीहै तथापरमकारुणिकहोणेतैंक्षमास्वभाववालाहै ॥ तथा जोपुरुष हर्ष अमर्ष भय उद्वेग इनचारोंनैं परित्यागकर्याहै ॥ तहां इष्टवस्तुकेलाभहुए जो रोमांचअश्रुपातादिकोंकाहेतुरूप तथाआनंदकाअभिव्यंजक चित्तकीवृत्तिविशेषहैं ताकानामहर्षहै ॥ और दूसरेकीउत्कृष्टताकाअसहनरूपजा चित्तकीवृत्तिविशेषहै ॥ ताकानाम अमर्षहै ॥ और व्याघ्र चौर शत्रु इत्यादिकअनिष्टवस्तुवोंकेदर्शनजन्य जा त्रासरूप चित्तकीवृत्तिविशेषहै ताकानाम भयहै ॥ और जनोंतैंरहितएकांतस्थानविषे सर्वपरिग्रहतैंशून्य एकाकीस्थितहुआमैं कैसेजीवोंगा इसप्रकारकी व्याकुलतारूप जा चित्तकीवृत्तिविशेषहै ताकानाम उद्वेगहै ॥ ऐसे हर्ष अमर्ष भय उद्वेग इनच्यारोंनैं जोपुरुष परित्यागकर्याहै ॥ अर्थात् सोब्रह्मवेत्तापुरुष अद्वैतदर्शीहोणेतैं तिनहर्षादिकोंकेयोग्यहैनहीं ॥ यातैं तिनहर्षादिकोंनैं आपेहीं सोतत्त्ववेत्तापुरुष परित्यागकरिदियाहै ॥ कोई सोतत्त्ववेत्तापुरुष तिनहर्षादिकोंकेत्यागवासतै आप व्यापारवालाहुआनहीं ॥ यहवार्त्ता स्मृतिविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (यथापर्वतमादीप्तंनाश्रयंतिमृगद्विजाः ॥ तद्वद्ब्रह्मविदोदोषानाश्रयंतेकदाचन ॥ १ ॥ मंत्रौषधबलैर्यद्वज्जीर्यतेभक्षितंविषम् ॥ तद्वत्सर्वाणिकर्माणिजीर्यंतेज्ञानिनःक्षणात् ॥ २ ॥) अर्थयह ॥ जैसे अग्निकरिकैदग्धहुएपर्वतकूं मृगादिक पशु तथापक्षी आश्रयणकरतानहीं ॥ तैसे ब्रह्मवेत्तापुरुषकूं रागद्वेषादिकदोष आश्रयणकरतानहीं ॥ १ ॥ और जैसे भक्षणकर्याहुआविष मंत्रऔषधिकेबलकरिकै जीर्णभावकूंप्राप्तहोइजावैहै ॥ तैसे ज्ञानवान्पुरुषके पुण्यपापरूपसर्वकर्मएकक्षणमात्रविषे नाशकूंप्राप्तहोवैहैं इति ॥ २ ॥ इसप्रकारकेगुणोंवाला जो मैंपरमेश्वरका भक्तहै ॥ सोब्रह्मवेत्ताभक्त मैंपरमेश्वरकूं आपणाआत्मारूपहोणेतैं अत्यंतप्रियहै ॥ इति ॥ १५ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) अनपेक्षःशुचिर्दक्षउदासीनोगतव्यथः ॥ सर्वारंभपरित्यागीयोमद्भक्तःसमेप्रियः ॥ १६ ॥ अनपेक्षः । शुचिः । दक्षः । उदासीनः । गतव्यथः । सर्वारंभपरित्यागी । यः । मद्भक्तः । सः । मे । प्रियः ॥ १६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जो पुरुष निरपेक्षहै तथाशुचिहै तथादक्षहै तथाउदासीनहै तथागतव्यथहै तथासर्वआरंभपरित्यागकऱ्येहैंजिसनैं ऐसाजो मेराभक्तहै सो भक्त मैंपरमेश्वरकूं अत्यंतप्रियहै ॥ १६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोपुरुष अनपेक्षहै ॥ अर्थात् विनाहींप्रयत्नतैं यदृच्छामात्रकरिकै प्राप्तहुएभी जेभोगकेसाधनहैं तिनसर्वभोगकेसाधनोंविषे जोपुरुष निस्पृहहै॥ तथा जोपुरुष शुचिहै ॥ अर्थात् बाह्यअंतर दोप्रकारकेशौचकरिकैयुक्तहै ॥ तहां जलमृत्तिकादिकोंकरिकै शरीरकाप्रक्षालनकरणा याकानाम बाह्यशौचहै ॥ और मैत्रीकरुणादिकोंकरिकै अंतःकरणकूंरागद्वेषादिकोंतैंरहितकरणा याकानाम अंतरशौचहै ॥ तथा जोपुरुष दक्षहै ॥ अर्थात् अवश्यकरिकैजानणेयोग्य तथा अवश्यकरिकैकरणेयोग्य ऐसेअर्थोंकेप्राप्तहुए जोपुरुष तिसतिसअर्थके जानणेकूं तथाकरणेकूंसमर्थहै ॥ तथा जोपुरुष उदासीनहै ॥ अर्थात् जोपुरुष किसीभी मित्रादिकोंकेपक्षकूंग्रहणकरतानहीं ॥ तथा जोपुरुष गतव्यथहै ॥ अर्थात् किसीदुष्टपुरुषोंनैं ताडनकीयेहुएभी नहींउत्पन्नहुईहैपीडारूपव्यथा जिसकूं ॥ तथा जोपुरुष सर्वारंभपरित्यागीहै ॥ तहां इसलोककेफलकीप्राप्तिकरणेहारे तथापरलोककेफलकीप्राप्तिकरणेहारे जितनैंकी लौकिकवैदिककर्महैं तिनकर्मोंकानाम सर्वारंभहै ॥ ऐसेसर्वारंभोंकूंपरित्यागकऱ्याहैजिसनैं ऐसाजोपरमहंससंन्यासीहै ताकानाम सर्वारंभपरित्यागीहै ॥ इसप्रकारका जोमैंपरमेश्वरकाभक्तहै ॥ सोब्रह्मवेत्ताभक्त मैंपरमेश्वरकूं आपणाआत्मारूपहोणेतैं अत्यंतप्रियहै इति ॥ १६ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) योनहृष्यतिनद्वेष्टिनशोचतिनकांक्षति ॥ शुभाशुभपरित्यागीभक्तिमान्यःसमेप्रियः ॥ १७ ॥ यः । न । हृष्यति । न । द्वेष्टि । न । शोचति । न । कांक्षति । शुभाशुभपरित्यागी । भक्तिमान् । यः । सः । मे । प्रियः ॥ १७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जोपुरुष नहीं हर्षकरेहै नहीं द्वेषकरेहै तथानहीं शोककरेहै तथानहीं इच्छाकरेहै तथा शुभ अशुभकर्मोंकापरित्यागकऱ्याहैजिसनैं ऐसाजो भक्तिमानपुरुषहै सोपुरुष परमेश्वरकूं प्रियहै ॥ १७ ॥ इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ तहां पूर्व त्रयोदशश्लोकविषे (समदुःखसुखः) यहविशेषणकथनकऱ्याथा ॥ तिसविशेषणकाहीं अब विस्तारतैंवर्णनकरेहैं ॥ हेअर्जुन जोपुरुष प्रियवस्तुकेप्राप्तहुए हर्षकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ तथाअप्रियवस्तुकेप्राप्तहुए जोपुरुष द्वेषकूंप्राप्तहोतानहीं तथा प्राप्तप्रियवस्तुकेवियोगहुए जोपुरुष शोककूंकरतानहीं ॥

तथा जोपुरुष इष्टवस्तुकेसंयोगकी तथा अनिष्टवस्तुकेवियोगकी इच्छाकरतानहीं ॥ अब (सर्वारंभपरित्यागी) इसपूर्वउक्तविशेषणकावर्णनकरेहैं (शुभाशुभ परित्यागीइति) हेअर्जुन सुखकीप्राप्तिकरणेहारे जेशुभकर्महैं ॥ तथादुःखकीप्राप्तिकरणेहारे जेअशुभकर्महैं ॥ तिनदोनोंप्रकारकेकर्मोंका परित्यागकऱ्याहैजिसनैं ॥ ऐसा मैंपरमेश्वरकी भक्तिवाला जोब्रह्मवेत्तापुरुषहै ॥ सोब्रह्मवेत्ताभक्त मैंपरमेश्वरकूं आपणाआत्मारूपहोणेतैं अत्यंतप्रियहै इति ॥ १७ ॥ ❁ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) समःशत्रौचमित्रेचतथामानापमानयोः ॥ शीतोष्णसुखदुःखेषुसमःसंगविवर्जितः ॥ १८ ॥ समः । शत्रौ । च । मित्रे । च । तथा । मानापमानयोः । शीतोष्णसुखदुःखेषु । समः । संगविवर्जितः ॥ १८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन पुनः जोपुरुष शत्रुविषे तथा मित्रविषे समानहै तथा मानअपमानदोनोंविषे समानहै तथा शीतउष्णसुखदुःखइनसर्वोंविषे समानहै तथासंगतैंरहि तहै ॥ १८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इसलोकविषे जोप्राणी किसीकाअपकारकरेहै ताकूं शत्रुकहेहै ॥ और जोप्राणी किसीकाउपकारकरैहै ताकूं मित्रकहेहैं ॥ ऐसे अपकारक रणेहारेशत्रुविषे तथाउपकारकरणेहारेमित्रविषे जोपुरुष समहै ॥ अर्थात् आपणे पापपुण्यरूपप्रारब्धकर्मकेवशतैंहीं इसदेहका कोईप्राणी अपकारकर्त्ता शत्रुहोवैहै तथाकोईप्राणी उपकारकर्त्ता मित्रहोवैहै याप्रकारका मनविषेविचारकरिकै जोपुरुष तिसशत्रुविषे तथामित्रविषे समदृष्टिहींहोवैहै ॥ तथा जोपुरुष सुहृदपुरुषोंनैंक ऱ्येहुए पूजनरूपमानविषे तथादुष्टपुरुषोंनैंकऱ्येहुए तिरस्काररूपअपमानविषे समहै ॥ अर्थात् तामान अपमानकृत हर्षविषादरूपविकारकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ तथा प्रारब्धकर्मकेवशतैंप्राप्तहुए जे शीतउष्ण सुखदुःख इत्यादिकद्वंद्वधर्महैं ॥ तिनशीतउष्णादिकद्वंद्वधर्मोंविषेभी जोपुरुष समानहै ॥ तथा जोपुरुष संगतैंरहितहै ॥ अ र्थात् इसलोकविषे चेतनरूपकरिकैप्रसिद्ध तथाअचेतनरूपकरिकैप्रसिद्ध जितनैंकीपदार्थहैं तिनसर्वपदार्थोंके यहपदार्थ अत्यंतरमणीकहै याप्रकारकेशोभनअध्यासतैं रहितहै इति ॥ १८ ॥ ❁ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) तुल्यनिंदास्तुतिर्मौनीसंतुष्टोयेनकेनचित् । अनिकेतःस्थिरमतिर्भक्तिमान्मेप्रियोनरः ॥ १९ ॥ तुल्यनिंदास्तुतिः । मौनी । संतुष्टः । येन । केनचित् । अनिकेतः । स्थिरमतिः । भक्तिमान् । मे । प्रियः । नरः ॥ १९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअ र्जुन तुल्यहैनिंदास्तुतिजिसकूं तथाजोपुरुष मौनवालाहै तथा जिस किसअन्नवस्त्रादिकोंकरिकै संतुष्टहै तथागृहतैंरहितहै तथास्थि रहैमतिजिसकी ऐसा भक्तिमान् पुरुष मैंपरमेश्वरकूं प्रियहै ॥ १९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन किसीकेदोषोंका कथनकरणा याकानाम निंदाहै ॥ और किसीकेगुणोंकाकथनकरणा याकानाम स्तुतिहै ॥ ऐसी निंदा तथास्तुति दोनों तुल्यहैंजिसकूं ॥ अर्थात् जैसे अज्ञानीपुरुष आपणीस्तुतिकूंश्रवणकरिकैसुखीहोवैहै तथाआपणीनिंदाकूंश्रवणकरिकैदुःखीहोवैहै ॥ तैसे जोपुरुष आपणीस्तुति निंदाकरिकै सुखदुःखकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ तथा जोपुरुष मौनीहै ॥ अर्थात् जिसपुरुषनैं आपणेवाक्इंद्रियकानिरोधकऱ्याहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् आपणेशरीर यात्राकेनिर्वाहवासतै तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकूंभी वाक्इंद्रियकाव्यापार अवश्यकरिकैअपेक्षितहोवैंगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्कहैहै (संतुष्टोयेनकेनचित्इति) हेअर्जुन आपणेप्रयत्नतैंविनाहीं बलवान् प्रारब्धकर्मनैं प्राप्तकऱ्येजे शरीरकीस्थितिकेहेतुरूप अन्नवस्त्रादिकपदार्थहैं ॥ तिनजिसीकिसीप्रकारकेअन्नवस्त्रादिकपदार्थोंकरिकैहीं जोपुरुष संतुष्टहै ॥ अर्थात् तिसतैंअधिकपदार्थोंकीइच्छातैंरहितहै ॥ तथा जोपुरुष अनिकेतहै ॥ अर्थात् नियमपूर्वक एकस्थानविषे निवासतैंरहितहै ॥ तथा जोपुरुष स्थिरमतिहै ॥ तहां स्थिरहै क्या परमार्थसत्यवस्तुविषयकहै मति क्या बुद्धिकीवृत्ति जिसकी ताकानाम स्थिरमतिहै ॥ इस प्रकारकाजोभक्तिमान्पुरुषहै ॥ सोभक्तिमान्पुरुष मैंपरमेश्वरकूं आपणाआत्मारूपहोणेतैं अत्यंतप्रियहै ॥ तहां शास्त्रविषे निर्गुणब्रह्मकेभक्तिका यहलक्षणकथन कऱ्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ (एकांतभक्तिर्गोविंदेयत्सर्वत्रतदीक्षणम् ॥ अहैतुक्यव्यवहितायाभक्तिःपुरुषोत्तमे ॥ लक्षणंभक्तियोगस्यनिर्गुणस्यह्युदाहृतम्) ॥ ॥ अर्थयह ॥ सर्वप्रपंचविषे अस्तिभातिप्रियरूपकरिकै जोपरमात्मादेवकादर्शनहै यहहीं तापरमात्मादेवविषे एकांतभक्तिहै ॥ अर्थात् अनन्यभक्तिहै ॥ और विपरीतभावनाकीनिवृत्तिआदिकप्रयोजनतैंरहित तथाविजातीयवृत्तिकेव्यवधानतैंरहित ऐसी जा ब्रह्मवेत्तापुरुषोंकी प्रत्यक्अभिन्नपरमात्मादेवविषे अखंडाकारवृत्ति रूपभक्तिहै ॥ यहहीं विद्वान्पुरुषोंनैं निर्गुणब्रह्मविषयकभक्तिकास्वरूप कथनकऱ्याहै इति ॥ इसप्रकारकीभक्तिवाला ब्रह्मवेत्तापुरुषहीं ईहां श्रीभगवान्नैं भक्तिमान् इसशब्दकरिकै तथा भक्त इसशब्दकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ और ईहां श्रीभगवान्नैं जोपुनःपुनः भक्तिकाकथनकऱ्याहै ॥ सोपरमेश्वरकाअनन्यभक्तिहीं मोक्षकी प्राप्तिविषेपुष्कलकारणहै इसअर्थकेदृढकरावणेवासतैं कथनकऱ्याहै ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (यस्यदेवेपराभक्तिर्यथादेवेतथागुरौ ॥ तस्यैतेकथिताह्यर्थाःप्रकाशंतेमहात्मनः) ॥ अर्थयह ॥ जिसअधिकारीपुरुषकी परमात्मादेवविषे अनन्यभक्तिहै ॥ तथा जैसे परमात्मादेवविषे अनन्यभक्तिहै तैसेहींब्रह्मवेत्तागुरुविषे अनन्यभक्तिहै ॥ तिस महात्मापुरुषकूंहीं यहवेदकरिकैप्रतिपादितअर्थ प्रकाशमानहोवैहै इति ॥ १९ ॥ ❋ ॥ तहां (अद्वेष्टासर्वभूतानाम्) इत्यादिकश्लोकोंकरिकै निर्गुणअक्षरब्रह्मकेचिंतनकरणेहारे जीवन्मुक्तपरमहंससंन्यासीयोंके लक्षणरूप तथास्वभावतैंहींसिद्ध अद्वेष्टृत्वादिकधर्म कथन कऱ्ये ॥ यहवार्त्ता वार्तिकग्रंथविषे सुरेश्वराचार्यनैंभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (उत्पन्नात्मावबोधस्यह्यद्वेष्टृत्वादयोगुणाः ॥ अयत्नतोभवंत्येवनतुसाधनरूपिणः)

॥ अर्थयह ॥ जिसपुरुषकूं गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाआत्मसाक्षात्कार उत्पन्नहुआहै ॥ तिसब्रह्मवेत्तापुरुषके तेभगवतउक्त अद्वेष्टृत्वादिकगुण विनाहींप्रयत्नतैं स्वभावतैंहींसिद्धहोवैहैं ॥ जैसे मुमुक्षुजनविषे तेअद्वेष्टृत्वादिकगुण प्रयत्नकरिकैसाध्यहोवैहैं तथासाधनरूपहोवैहैं ॥ तैसे ब्रह्मवेत्तापुरुषविषे तेअद्वेष्टृत्वादिकगुण प्रयत्नकरिकैसाध्यहोवैनहीं तथासाधनरूपभीहोवैनहीं इति ॥ यहहीं अद्वेष्टृत्वादिकधर्म पूर्वकथनकऱ्येहुए स्थितप्रज्ञपुरुषके लक्षणरूपकरिकैकथन कऱ्येहैं तेहीं यहअद्वेष्टृत्वादिक प्रयत्नकरिकैसंपादनकऱ्येहुए मुमुक्षुजनके मोक्षकासाधनरूपकहोवैहैं ॥ इसअर्थकूं प्रतिपादनकरताहुआ श्रीभगवान् इसद्वादशे अध्यायकीसमाप्ति करैहै ॥

(मू० श्लो०) येतुधर्मामृतमिदंयथोक्तंपर्युपासते ॥ श्रद्दधानामत्परमाभक्तास्तेतीवमेप्रियाः ॥ २० ॥ इतिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेभक्तियोगोनामद्वादशोऽध्यायःसमाप्तः॥ १२ ॥ ये । तु । धर्मामृतम् । इदं । यथा । उक्तं । पर्युपासते । श्रद्दधानाः । मत्परमाः । भक्ताः । ते । अतीव । मे । प्रियाः ॥ २० ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन पुनः जेमुमुक्षुजन श्रद्धावान्हुए तथामैंपरमेश्वरपरायणहुए इस पूर्व उक्त धर्मरूपअमृतकूं संपादनकरेहैं तेमुमुक्षु भक्तजनभी मैंपरमेश्वरकूं अत्यंत प्रियहैं ॥ २० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हे अर्जुन पूर्वकथनकऱ्येहुएजीवन्मुक्तपुरुषोंतैंविलक्षणजे मोक्षकीइच्छावान्संन्यासी श्रद्धावान्हुए अर्थात् यहअद्वेष्टृत्वादिकधर्महीं मुक्तिकेसाधनहैं याप्रकारकी विश्वासरूपश्रद्धाकरिकै युक्तहुए ॥ तथा जेमुमुक्षुजन मत्परमहुए अर्थात् मैं अक्षरनिर्गुणब्रह्महींहूं परम क्या प्राप्तहोणेयोग्यनिरतिशय गति जिनोंकूं ऐसेंतपरमहुए इसपूर्वउक्त धर्मरूपअमृतकूं संपादनकरेहैं ॥ अर्थात् मोक्षरूपअमृतकेसाधनहोणेतैं अमृतरूप अथवा अमृतकीन्यांई आस्वादनकरणे योग्यहोणेतैं अमृतरूप ऐसेजे (अद्वेष्टासर्वभूतानाम्) इत्यादिकवचनोंकरिकैकथनकऱ्येहुए अद्वेष्टृत्वादिकधर्महैं ॥ तिसधर्मरूपअमृतकूं जेमुमुक्षुजन प्रयत्नतैं संपादन करेहैं ॥ तेभक्तजन अर्थात् मैंनिरुपाधिकब्रह्मकूंभजनकरणेहारेपुरुष मैंपरमेश्वरकूं अत्यंतप्रियहैं ॥ यहश्रीभगवान्कावचन (प्रियोहिज्ञानिनोत्यर्थमहंसचममप्रियः) इसपूर्वउक्तवचनकरिकैसूचनकऱ्येहुएअर्थका उपसंहाररूपहै ॥ यातैं इसश्लोकका यहअर्थसिद्धभया ॥ जिसकारणतैं इस अद्वेष्टृत्वादिकधर्मरूपअमृतकूं श्रद्धाकरिकैसंपादनकरताहुआ यह अधिकारीपुरुष परमेश्वरका अत्यंतप्रियहोवैहै ॥ तिसकारणतैं ज्ञानवान्पुरुषके स्वभावसिद्धहोणेतैं लक्षणरूपहुएभी यह अद्वेष्टृत्वादिकधर्म तत्त्वकेजानणेकीइच्छावान् तथाविष्णुकेपरमपदकेप्राप्तिकीइच्छावान् ऐसेमुमुक्षुजननैं आत्मज्ञानकाउपायरूपकरिकैअत्यंतप्रयत्नतैंसंपादनकरणे इति ॥

यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ पूर्वउक्त सोपाधिकसगुणब्रह्मकेध्यानकीपरिपक्कतातैं अनंतर निरुपाधिकनिर्गुणब्रह्मकाचिंतनकरणेहारा तथाअद्वेष्टृत्वादिकधर्मोंकरिके युक्त तथानिरंतर श्रवणमनननिदिध्यासनकूंकरताहुआ ऐसाजो उत्तमअधिकारीपुरुषहै ॥ तिसउत्तमअधिकारीपुरुषकूं वेदांतवाक्योंकेअर्थका तत्वसाक्षात्कार अवश्यकरिकैहोवैहै तिसतत्त्वसाक्षात्कारतैं ताअधिकारिपुरुषकूं अवश्यकरिकै मुक्तिकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं मुक्तिकाहेतुरूप जो वेदांतमहावाक्योंकाअर्थहै ॥ तिसअर्थकेअन्वययोग्यजो तत्पदार्थरूप परमेश्वरहै ॥ सोतत्पदार्थरूपपरमेश्वर इनअधिकारीजनोंनै अवश्यकरिकै चिंतनकरणा ॥ यहअर्थ उपासनाकाण्डरूप इसमध्यकेषट्ककरिकैसिद्धभया इति ॥ २० ॥ ❀ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायां गीतागूढार्थदीपिकाख्यायां द्वादशोऽध्यायःसमाप्तः ॥ १२ ॥ उपासनाकांडंद्वितीयंतत्पदार्थप्रतिपादनंसमाप्तम् ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकृष्णायनमः ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

इति द्वादशोऽध्यायःसमाप्तः ॥ १२ ॥

